हिंदी त्रैमासिक

पहचान

देश से हम, हमसे देश

ISSN 2815-8326

वर्ष 2 | अंक 1 | जुलाई- सितंबर 2023 | पृष्ठ संख्या 32

प्रधान संपादक : प्रीतमव्यास

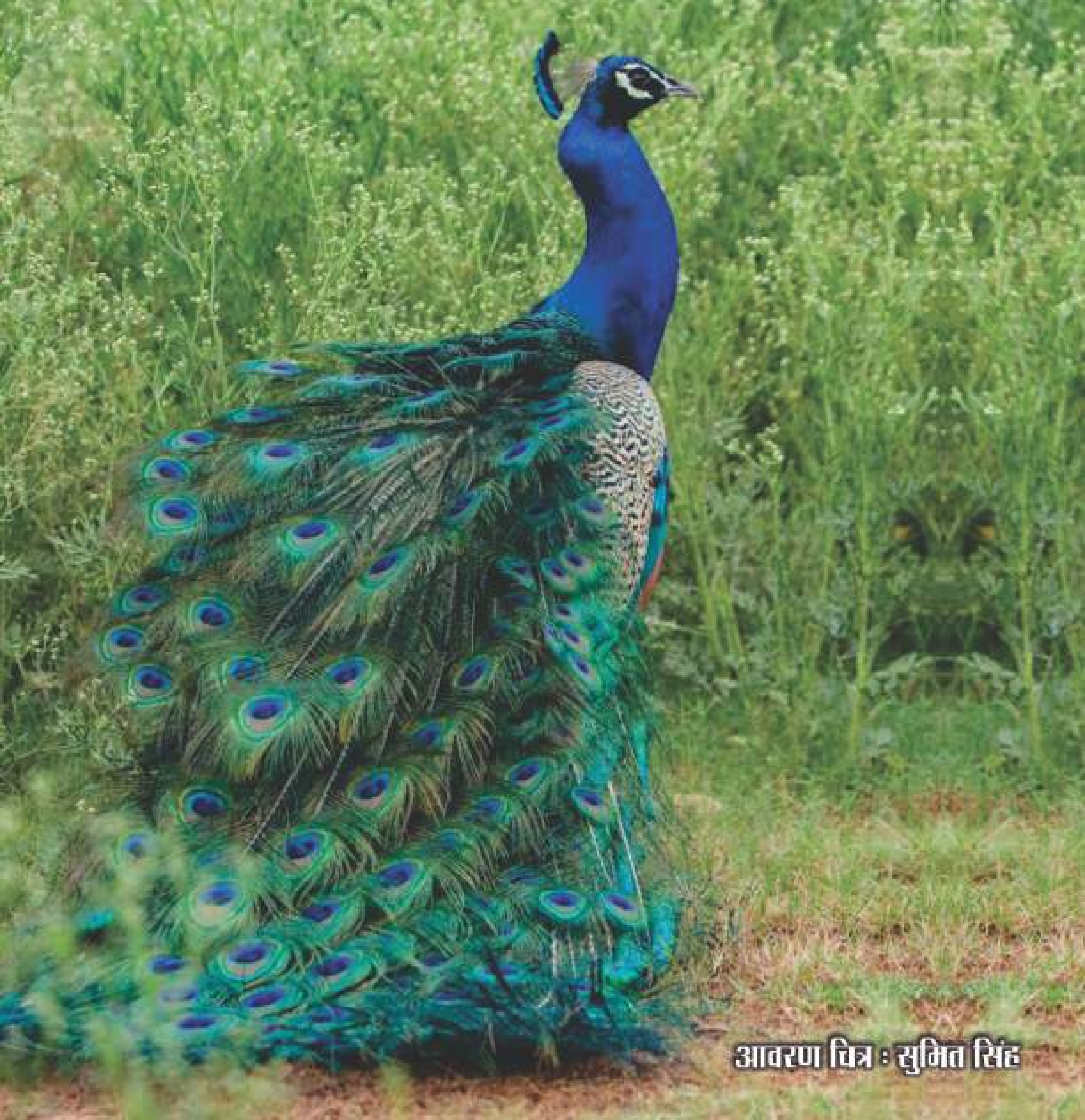

आवरण चित्र : सुमित सिंह

BEST CONSTRUCTION
BETTER HOME

ARCHPOINT LTD

ArchPoint Ltd

You Dream, We make the Dreams True!

Our Best Services:

- PROVIDING END-TO-END RESOURCE CONSENT, EPA AND BUILDING CONSENT SERVICES
- FEASIBILITY STUDIES - PRE & POST PURCHASE OF YOUR PROPERTY
- ARCHITECTURAL DESIGNING
- PLANNING & PROJECT MANAGEMENT
- SURVEYING
- GEOTECHNICAL INVESTIGATIONS & REPORTS
- CIVIL ENGINEERING FOR INFRASTRUCTURE DESIGNING
- STRUCTURAL ENGINEERING

engineering new zealand
LICENSED BUILDING PRACTITIONER BUILDING CONFIDENCE
PMI NEW ZEALAND CHAPTER
ADNZ Professional Member

64 21848 552 archpoint.co.nz

GODWIN-AUSTEN

GODWIN-AUSTEN

You Wish, We bring the wishes to Reality!

Our Best Services:

- Subdivisions & Building Construction on Turn Key Basis
- Land and Home Packages
- Design & Build
- 10 Years Master Builder Guarantee
- Auckland Wide Operations

MASTER BUILDERS
PMI NEW ZEALAND CHAPTER

64 21889 918 OR 64 21848 552 godwinausten.co.nz

हिंदी त्रैमासिक
पहचान
देश से हम, हमसे देश

संस्थापक/ प्रधान संपादक
प्रीता व्यास

सलाहकार संपादक
रोहित कृष्ण नंदन

सहयोगी संपादक
वंदना अवस्थी दुबे
माला चौहान

ले आउट/ ग्राफिक्स
Design n Print, India

कवर पेज
सुमित सिंह

प्रकाशक
पहचान
आकलैंड, न्यूज़ीलैंड
editor@pehachaan.com

पत्रिका में प्रकाशित लेख, रचनाएं, साक्षात्कार लेखकों के निजी विचार हैं, उनसे प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं. रचनाओं की मौलिकता के लिए लेखक स्वयं जिम्मेवार है. कुछ चित्र और लेखों में प्रयुक्त कुछ आंकड़े इंटरनेट वेबसाइट से संकलित किये गए हो सकते हैं.

दो शब्द

पांच जून को विश्व पर्यावरण दिवस मनाया जाता है. इसके आयोजन के लिए अलग-अलग देशों को चुना जाता है. ये आयोजन जनसंख्या विस्फोट, ज़मीनी और समुद्री प्रदूषण, वायु प्रदूषण, ग्लोबल वार्मिंग, वाइल्ड लाइफ क्राइम, सस्टेनेबल कंज़्यूमप्शन जैसे कई पर्यावरणीय मुद्दों पर जागरूकता बढ़ाने का एक ऐसा मंच है जिसमें 143 से अधिक देशों की भागीदारी है. पर्यावरण को लेकर हालांकि हमें और जागरूक होने की आवश्यकता है. हमें अपनी नदियों, पेड़ों पहाड़ों और भूमि को ज़्यादा सम्हालने की ज़रुरत है. अगर मौसमों को नाराज़ नहीं करना है तो हमें अपने व्यवहार को लगातार ठीक रखना होगा.

हमारे बहुत से त्यौहार हैं जो मौसमों से, ऋतुओं से जुड़े हुए हैं. सावन आता है तो आज भी पेड़ों की मज़बूत डालों पर रस्सियों के झूलों का डालना और उनकी पींगें, मेहंदी की ताज़ा हरी पत्तियों को सिल पर पीस कर हथेलियों पर रचाने और किसकी मेहंदी ज़्यादा लाल रची ये देखने, हंसने, चिढ़ाने के बचपन के सपनों का सांद्रीकृत आसव गले में मिठास घोलने लगता है.

'झूला तो पड़ गए अमुआ की डार पै जी
ऐ जी कोई राधा को, गोपाला बिन राधा को
झुलावे झूला, कौन ? झूला तो पड़ गए....'

समय इतना बदल चुका है कि अब इन स्मृतियों की चर्चा भी वास्तविकता कम और कहानी-सी ज़्यादा लगती है. लेकिन इन कहानियों में भी वही पर्यावरण के प्रति प्रेम और जुड़ाव तो पूरी वास्तविकता के साथ उपस्थित है.

हमारा पर्यावरण सुरक्षित रहे, प्रकृति सुरक्षित रहे तभी हमारा जीवन सरलता से आगे बढ़ेगा और जब जीवन आगे बढ़ेगा तो देश आगे बढ़ेगा. देश जिसकी स्वतंत्रता के लिए सदियों का कठोरतम संघर्ष रहा है. स्वतंत्रता दिवस पर अपने सभी ज्ञातअज्ञात स्वतंत्रता सेनानियों, देश के वीर जवानों, शहीदों को याद करते हुए अपने सभी पाठकों को शुभकामनाएं देती हूं.

आपका साथ और सहयोग हमारा बल है. यही बल हमारी पहचान है. जुड़िये और जुड़े रहिये.

प्रीता व्यास

इस अंक में...

पाठकीय प्रतिक्रियाएं		5
आलेख		
प्रकृति के संवरने का मौसम है सावन	ध्रुव गुप्त	6
सांप बचेगा तो धरती बचेगी	पंकज चतुर्वेदी	7-8
भारत की राष्ट्रीयता	अरुण उपाध्याय	9-12
आध्यात्म		
भगवद गीता से पहुंचें अपने सर्वोच्च स्तर तक	ऋषभ मिश्रा	13-14
लघु कथा		
सौदागर	सूरज प्रकाश	15
कविता		
सावन में विरहिन	सुनील श्रीवास्तव	16
युद्ध : चार बिंब	प्रतिभा चौहान	17
देश	त्रिलोक सिंह ठकुरेला	18
लोक कला		
रावणहत्था : राजस्थान के लोकगीतों की जान	पवन चौहान	19-20
गीत		
नमन, नमन, नमन तुझे	सोनरूपा विशाल	21
ग़ज़ल		
जय हिंद, जय भारत	डॉ. सीमा विजयवर्गीय	22
विदेशों में हिन्दी		
आज़ादी और नव-चेतना	आशीष शर्मा (इंडोनेशिया)	23
आज़माइश अभी बाकी है	योगिता शर्मा (इंडोनेशिया)	23
लोक संस्कृति		
राजस्थान की हरियाली तीज	कपिल जोशी	24
धरोहर		
निष्कलंक महादेव	प्रियदर्शी व्यास	25
संस्मरण		
धर्मयुग और धर्मवीर भारती	राजशेखर व्यास	26-27
परंपरा		
राखी बंधवा ले मेरे वीर	विनीता गुप्ता	28
बाल साहित्य		
दुकान गोलगप्पे की..	रन्दी सत्यनारायण राव	29
फिल्म समीक्षा		
भीड़	शकील आज़मी	30
चित्र चयन		
इस तिमाही का चित्र	घुमक्कड़ रहमत	32

पाठकीय प्रतिक्रियाएं

आपकी पत्रिका की प्रथम वर्षगांठ पर बधाई. आपकी प्रतिबद्धता और जिजीविषा को सलाम.

- शैलेंद्र शैली

प्रीता व्यास जी उन प्रवासी भारतीयों में से हैं जिन्होंने विदेशी धरती पर रहते हुए भी अपनी जड़ों से जुड़ाव बनाये रखा हुआ है. प्रीता व्यास जी का साहित्य का अनुराग खुली किताब की तरह है विशेष कर लोकभाषाओं के प्रति उनका समर्पण देखते ही बनता है. ऑकलैंड (न्यूज़ीलैंड) से प्रकाशित होने वाली त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका 'पहचान' का अप्रैल जून (2023) अंक ग़ज़ल विशेषांक था और इस विशेषांक का वैशिष्ट्य यह था कि इसमें आप हिंदी उर्दू के अलावा मेरी ब्रज गजलों के साथ साथ डोगरी, पंजाबी, गुजराती, भोजपुरी, बुंदेली, हिमाचली और मराठी भाषा की ग़ज़लों का भी लुत्फ़ ले सकते हैं. भाषाई स्तर पर कहिए या लोकसाहित्य के स्तर पर यह एक उल्लेखनीय पहल है. प्रीता जी का और उनकी टीम का इस अनुपम भेंट के लिए बहुत बहुत आभार.

- नवीन सी. चतुर्वेदी

पत्रिका का ग़ज़ल विशेषांक बहुत बढ़िया है; खासकर ग़ज़लों के चयन के लिहाज से. बधाई.

- राम मुरारी

मैंने 'पहचान' को देखा, बहुत अच्छा एवं सराहनीय प्रयास है. लेख, कविताओं का चयन बहुत अच्छा है. पता लगता है आप कितनी प्रतिबद्ध हैं अपने प्रयास के प्रति.शुभकामनायें.

- कौशलेन्द

पत्रिका का नया अंक आते ही पहली फुरसत में राजा परीक्षत की बावड़ी, महेश कटारे की बुंदेली कविता, सलिल वर्मा जी का लेख नाम में क्या रखा है, सभी पढ़ डाला. मैंने अभी तक के तीन अंकों की हार्ड कॉपी बनाकर रखी है.

रूपेश जी ऐतिहासिक संपदा पर बहुत अच्छी जानकारी देते हैं. दतिया की पुरातन संपदा पर लघु फिल्म भी बना चुके हैं.

विदेश से, हिंदी में, डिजिटल पत्रिका प्रकाशित करने का यह प्रयास सराहनीय है. यह सेवा हमारी बुंदेलखंड की बिटिया ने किया यह बड़े गौरव की बात है. प्रीता जी को हार्दिक बधाई.

- ओम प्रकाश दीक्षित

आपकी 'पहचान' सार्थक विषयवस्तु, आकर्षक रूपसज्जा लिए है और उस पर आपका कसा हुआ संपादन. यह सब समेटे है. प्रस्तुति पसंद आई. बधाई.

- डॉ. सुनील आर्य

आपके अप्रैल जून अंक में मूर्ख दिवस पर लेख पढ़कर मुझे अपनी एक कविता स्मरण हो आई.

चतुराई का हर दिन जाल बिछाते हैं.
मूर्ख दिवस क्यों दिन बस एक मनाते हैं.
जैसे हों हालात करें बर्दाश्त उन्हें,
छोटी खुशियों में हम खुश हो जाते हैं.
आदत है नीचा दिखलायें सबको हम,
निज स्वारथ में सबको मूर्ख बनाते हैं.
सवा शेर भी मिलते हैं हम शेरों को,
जिनसे हम सब अक्सर धोखे खाते हैं.
ग़ैर दुखाएं दिल तो इसमें अचरज क्या ?
दु:ख होता है जब अपने हमें सताते हैं.
बन कर जो चट्टान साथ में खड़े रहें,
जीवन में ऐसे कम ही मिल पाते हैं.
जिनके मुंह में मिश्री जैसी घुली हुई,
अपनी बातों से सबको बहलाते हैं.
कभी बनें खुद, कभी बनाएं औरों को,
'अटल' रोज है मूर्ख दिवस, बतलाते हैं.

- अटल राम चतुर्वेदी

प्रकृति के संवरने का मौसम है सावन

ध्रुव गुप्त

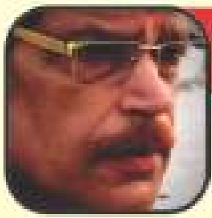

सावन के महीने का आरंभ हो गया है. सावन बारिशों का महीना है जब महीनों की झुलसाती धूप और ताप से बेचैन धरती की प्यास बुझती है. सावन जहां पृथ्वी और बादल मिल कर सृष्टि और हरियाली के नए-नए तिलिस्म रचते हैं. सावन की झोली में सबके लिए कुछ न कुछ है. कृषकों के लिए यह धरती की गोद में फसल के साथ सपने बोने का महीना है. प्रेमियों के लिए यह बसंत के बाद प्रेम के लिए दूसरा सबसे अनुकूल मौसम है. बच्चों के लिए यह उमंग, उल्लास और कागज की नाव चलाने के दिन हैं. लड़कियों के लिए यह झूले में बैठ कर आकाश नापने का मौका है. विवाहित स्त्रियों के लिए यह कजरी गीतों के बहाने मायके में छूट गए रिश्तों को याद करने का मौसम है. जीवन से उदासीन जिन थके हारे लोगों के लिए जीवन में कुछ नहीं बचा, उनके लिए भी जीवन को कई-कई रूपों में अंकुरित होते देखने का अवसर तो है ही.

धर्म की दृष्टि से सावन को भगवान शिव का महीना कहा जाता है. प्राचीन काल में देवताओं और असुरों के समुद्रमंथन का संयुक्त अभियान सावन के महीने में ही समाप्त हुआ था. मंथन से जो चौदह रत्न मिले थे उनमें से बारह देवताओं के हिस्से में आए और मात्र एक वारुणी असुरों के हिस्से में. चौदहवें रत्न, विनाशकारी हलाहल विष का कोई दावेदार नहीं था. सृष्टि को इस घातक विष के प्रभाव से बचाने के लिए शिव ने यह जहर पीना स्वीकार किया और नीलकंठ बने. उनके शरीर में विष का ताप कम करने के लिए देवताओं ने गंगाजल लाकर उनका अभिषेक किया. तब से सावन में शिव भक्तों द्वारा पवित्र नदियों से जल लेकर भारत के ज्योतिर्लिंगों और शिव के दूसरे मंदिरों में चढ़ाने की परंपरा रही है.

वैसे भी सावन प्रकृति के संवरने का मौसम है और शिव प्रकृति के देवता. पर्वत शिव का आवास है. वन उनकी क्रीड़ा भूमि. नदी उनकी जटाओं से निकलती है. योग से वे वायु को नियंत्रित करते हैं. उनकी तीसरी आंख में अग्नि का तेज और माथे पर चंद्रमा की शीतलता है. सांप, बैल, मोर, चूहे उनके परिवार के सदस्य हैं. उनके पुत्र गणेश का सर हाथी का है. उनकी पत्नी पार्वती के एक रूप दुर्गा का वाहन सिंह है. उनका त्रिशूल प्रकृति के तीन गुणों रज, तम और सत का प्रतीक है. उनके डमरू के स्वर में प्रकृति का संगीत है. उनकी पूजा महंगी पूजन सामग्रियों से नहीं, प्रकृति में बहुतायत से उपलब्ध बेलपत्र, भांग की पत्तियों, धतूरे और कनैल के फूलों से की जाती है. शिव निश्छल, भोले और कल्याणकारी हैं. एकदम प्रकृति की तरह.

महादेव शिव का जीवन यह संदेश है कि प्रकृति से तादात्म्य स्थापित कर जीवन में सुखशांति, सरलता, शौर्य, अध्यात्म, योग सहित कोई भी उपलब्धि प्राप्त की जा सकती है. शिव का सावन प्रकृति के साथ साहचर्य का संदेश है. यह चेतावनी भी कि प्रकृति के साथ अनाचार का हासिल अंततः प्रलयंकारी तांडव के सिवा कुछ नहीं होने वाला है. ■

सांप बचेगा तो धरती बचेगी

Photo: Manish Arya

पंकज चतुर्वेदी

आदिकाल में मनुष्य जिससे डरा, जिससे उपकारित हुआ, उन सभी को पूजने लगा. हमारे पूर्वज जानते थे कि हर जीव हर जंतु प्रकृति के अस्तित्व के लिए अनिवार्य हैं सो हर जीव को किसी भगवान या पर्व से जोड़ दिया. सावन माह की शुक्ल पंचमी को नाग पंचमी त्योहार मनाया जाता है. इस दिन नाग देवताओं की पूजा होती है. ध्यान दें, गर्मी में सर्प धरती के भीतर रहते हैं, गहरे में बाम्बी बना कर. आषाढ़ की हलकी बरसात में उन्हें मौसम बदलने का पूर्वानुमान हो जाता है. जैसे ही सावन में बरसात की झड़ी लगती है और बाम्बियों में पानी भरने लगता है, सर्प सुरक्षित ठिकाने की तलाश में निकल आता है, यह समय उसके जीवन के लिए अमूल्य होता है. तभी पीढ़ियों पहले समाज ने इस ऋतु में नाग पंचमी का आख्यान स्थापित किया, ताकि लोग इससे डरे नहीं, इसकी पूजा करें और इसके नैसर्गिक जीवन में दखल न दें.

नागपंचमी का यह पर्व यह संदेश देता है कि नाग जाति की उत्पत्ति मानव को हानि पहुंचाने के लिए नहीं हुई है. नाग पर्यावरण के संतुलन को बनाए रखते हैं. चूंकि हमारा देश कृषि प्रधान देश है एवं नाग खेती को नुकसान करने वाले चूहे एवं अन्य कीट आदि का भक्षण कर फसल की रक्षा ही करते हैं. इस प्रकार यह हम पर नाग जाति का उपकार होता है. अतः नाग को मारना या उनके प्रति हिंसा नहीं करना चाहिए. मूलतः नागपंचमी नाग जाति के प्रति कृतज्ञता के भाव प्रकट करने का पर्व है. यह पर्व नाग के साथ प्राणी जगत की सुरक्षा, प्रेम, अहिंसा, करुणा, सहनशीलता के भाव जगाता है. साथ ही प्राणियों के प्रति संवेदना का संदेश देता है.

भविष्य पुराण के पंचमी कल्प में नागपूजा और नागों को दूध अर्पित करने का जिक्र किया गया है. मान्यता है कि सावन के महीने में नाग देवता की पूजा करने और नाग पंचमी के दिन दूध अर्पित करने से नाग देवता प्रसन्न होते हैं और नाग दंश का भय नहीं रहता है. इसका कारण यह है कि महाराज जनमेजय के नाग यज्ञ से नागों का शरीर जल गया था. नागों की रक्षा आस्तिक मुनि ने की और इनके जलते हुए शरीर पर दूध डालकर शीतलता प्रदान की.

धार्मिक मान्यताओं के अनुसार नाग को दूध पिलाने से पाचन नहीं हो पाने या प्रत्यूर्जता से उनकी मृत्यु हो जाती है. इसलिए शास्त्रों में नागों को दूध पिलाने को नहीं बल्कि दूध से स्नान कराने को कहा

गया है. लेकिन लोगों ने सांप को दूध पिलाने की परंपरा ही शुरू कर दी. जबकि इससे सांपों की जिंदगी पर बन आती है. जान लें न तो सांप को दूध पीना पसंद है और न ही वह उसका भोजन है. यह भी समझ लें कि सांप के कान नहीं होते और वह किसी भी तरह से बीन की धुन पर नहीं नाचता. वह केवल बीन के हिलते हुए मुख के को देखते हुए हिलता है.

नाग पंचमी पर जबरदस्ती दूध के बर्तन में मुंह देने से उसके फेंफडों में दूध चला जाता है जो उसकी मृत्यु का कारण बनता है. वहीं कई बार सांप को लगाए गए सिंदूर या कुमकुम से उनकी आंख फूट जाती हैं. असल में हमारे पूर्वजों ने सांप के प्रति सम्मान या जागरूकता के लिए नाग पंचमी का पर्व प्रारंभ किया था. आज हम सांप के प्राकृतिक पर्यावास में अपना घर बना चुके हैं, सो वह बस्तियों में आ जाता है. असल में हमने उनके घर पर अपनी बस्ती बनाई है. वास्तव में सांप उन चूहों व कीटों को चट कर जाता है जो किसान की मेहनत की बीस फीसदी तक फसल को नुकसान पहुचाते हैं. सांप को किसान का मित्र कहा जाता है. सांप संकेतक प्रजाति हैं, इसका मतलब यह है कि आबोहवा बदलने पर सबसे पहले वही प्रभावित होते हैं. इस लिहाज से उनकी मौजूदगी हमारी मौजूदगी को सुनिश्चित करती है. हम सांपों के महत्व को कम महसूस करते हैं और उसे डरावना प्राणी मानते हैं, जबकि सच्चाई यह है कि उनके बगैर हम कीटों और चूहों से परेशान हो जाएंगे. यह भी जान लें कि सांप तभी आक्रामक होते हैं, जब उनके साथ छेड़-छाड़ की जाए या हमला किया जाए. वे हमेशा आक्रमण करने की जगह भागने की कोशिश करते हैं.

मेंढकों का इतनी तेजी से सफाया करने के बहुत भयंकर परिणाम सामने आए हैं. मेंढक पानी व दलदल में रहने वाला जीव है. इसकी खुराक हैं वे कीड़े-मकोड़े, मच्छर तथा पतंगे, जो हमारी फसलों को नुकसान पहुंचते हैं. अब हुआ यह कि मेंढकों की संख्या बेहद घट जाने से प्रकृति का संतुलन बिगड़ गया. पहले मेंढक बहुत से कीड़ों को खा जाया करते थे, किंतु अब कीटपतंगों की संख्या बढ़ गई और वे फसलों को भारी नुकसान पहुंचाने लगे.

दूसरी ओर सांपों के लिए भी कठिनाई उत्पन्न हो गई. सांपों का मुख्य भोजन हैं मेंढक और चूहे. मेंढक समाप्त होने से सांपों का भोजन कम हो गया तो सांप भी कम हो गए, सांप कम होने का परिणाम यह निकला कि चूहों की संख्या में वृद्धि हो गई. वे चूहे अनाज की फसलों को चट करने लगे. इस तरह मेंढकों को मारने से फसलों को कीड़ों और चूहों से पहुंचने वाली हानि बहुत बढ़ गई. मेंढक कम होने पर वे मक्खी-मच्छर भी बढ़ गए, जो पानी वाली जगहों में पैदा होते हैं और मनुष्यों को काटते हैं या बीमारियां फैलाते हैं.

पौराणिक कथाओं के अनुसार, द्वापर युग के अंतिम राजा परीक्षित को तमाम यज्ञ, अनुष्ठान के बावजूद तक्षक नामक सर्प ने मार डाला था. परीक्षित अभिमन्यु के पुत्र थे, जिन्हें अश्वस्थामा ने उत्तरा के गर्भ में ही मार डाला था, लेकिन मृत रूप में जन्मे परीक्षित को योग शक्ति से कृष्ण ने बचा लिया था. परीक्षित का आशय ही परीक्षण से है. संसार, आत्मा, परमात्मा के परीक्षण में अविवेकरूपी सर्प के डसने की आशंका निरंतर बनी रहती है. विकार रूपी कलियुग जब विवेक रूपी परीक्षित के राज्य में घुसने की कोशिश करने लगा तो दयाभाव में आकर परीक्षित ने सोना, जुआ, मद्य, स्त्री और हिंसा में कलियुग को स्थान दे दिया. इन्हीं पंचस्थलों से निकलने वाले सर्प मनुष्य के सुखद जीवन को डसते हैं.

सांप को गुस्सा, क्रोध अहंकार से जोड़ा गया है क्योंकि उनके अंदर का विष किसी को भी खत्म करने के लिए काफी होता है तो उनमें अहंकार होना स्वाभाविक है लेकिन इतने शक्तिशाली होने के बाद भी अपने आपको स्थिर शांत और दयालु बनाए रखना महानता होती है नागपंचमी का पर्व अपने अंदर का क्रोध और अहंकार इसी व्रत पर्व के साथ खत्म करने की बहुत बड़ी सीख लिए होता है. ■

भारत की राष्ट्रीयता

अरुण उपाध्याय

पुराणों में विश्व के 2 प्रकार के विभाजन हैं. 7 लोक और तल-उत्तर गोल का 4 खंड में समतल नक्शा बनता था जो विषुव रेखा को घेरने वाले वर्ग पर पृथ्वी व्यास के 100 गुणे ऊंचे पिरामिड सतह पर प्रक्षेप था. इसे मेरु के 4 रंग के 4 पार्श्व कहा गया है. प्राचीन काल में उज्जैन की देशान्तर रेखा को शून्य मानते थे. उसके पूर्व और पश्चिम 4545 अंश दूरी तक विषुव से उत्तर ध्रुव तक भाग को भारत पाद या भूमि रूप कमल का दल कहते थे.

अन्य 3 पाद थे पूर्व में भद्राश्व वर्ष, पश्चिम में केतुमाल वर्ष, विपरीत दिशा में कुरु वर्ष (विष्णु पुराण, 2/2/24, 40). इसी प्रकार दक्षिण गोल में भी 4 पाद थे. भारत भाग में विषुव से उत्तर ध्रुव तक आकाश के 7 लोकों की तरह 7 लोक थे. विंध्य के दक्षिण भू लोक, हिमालय तक भुवः, हिमालय या त्रिविष्टप (तिब्बत) स्वः, चीन महः, मंगोलिया जनः, साइबेरिया तपस (स्टेपीज), ध्रुव वृत्त सत्य लोक. अन्य 7 पाद 7 तल थे भारत के दक्षिण तल या महातल, केतुमाल या अतल, उसके दक्षिण तलातल, कुरु वर्ष पाताल, उसके दक्षिण रसातल, भद्राश्व को सुतल, उसके दक्षिण वितल.

अन्य वर्णन वास्तविक महाद्वीपों का था. जम्बू द्वीप एशिया, प्लक्ष द्वीपयूरोप, कुश द्वीपविषुव के उत्तर अफ्रीका, शाल्मलि द्वीपविषुव के दक्षिण अफ्रीका, कुश या अग्नि द्वीप (भारत से अग्नि कोण में)आस्ट्रेलिया, उत्तर अमेरिका (क्रौञ्च द्वीप), दक्षिण अमेरिका

पुष्कर द्वीप. इसके अतिरिक्त दक्षिणी ध्रुव का अलग से नक्शा बनता था क्योंकि मेरु प्रक्षेप में यह अनंत आकार का हो जायेगा. अतः इसे अनंत द्वीप कहते थे. उत्तर ध्रुव जल भाग में है (आर्यभटीय, 4/12), अतः वहां कोई समस्या नहीं होती. द्वीपों के घेरने वाले 7 समुद्र हैं.

2. भारत के अन्य दो अर्थ

(क) हिमालय को पूर्व समुद्र से पश्चिम समुद्र तक फैलाने पर वह 9 खण्ड का भारतवर्ष है, जिस पर पिछले 31,000 वर्षों से स्वायम्भुव मनु, राजर्षि ध्रुव, पृथु, 14 इन्द्र, वैवस्वत मनु, पुरु, ययाति, इक्ष्वाकु, ऋषभ, उशीनर, मान्धाता, दिलीप, गाधि तथा अन्य कई प्रतापी राजाओं ने शासन किया है (महाभारत, भीष्म पर्व, 9/59).

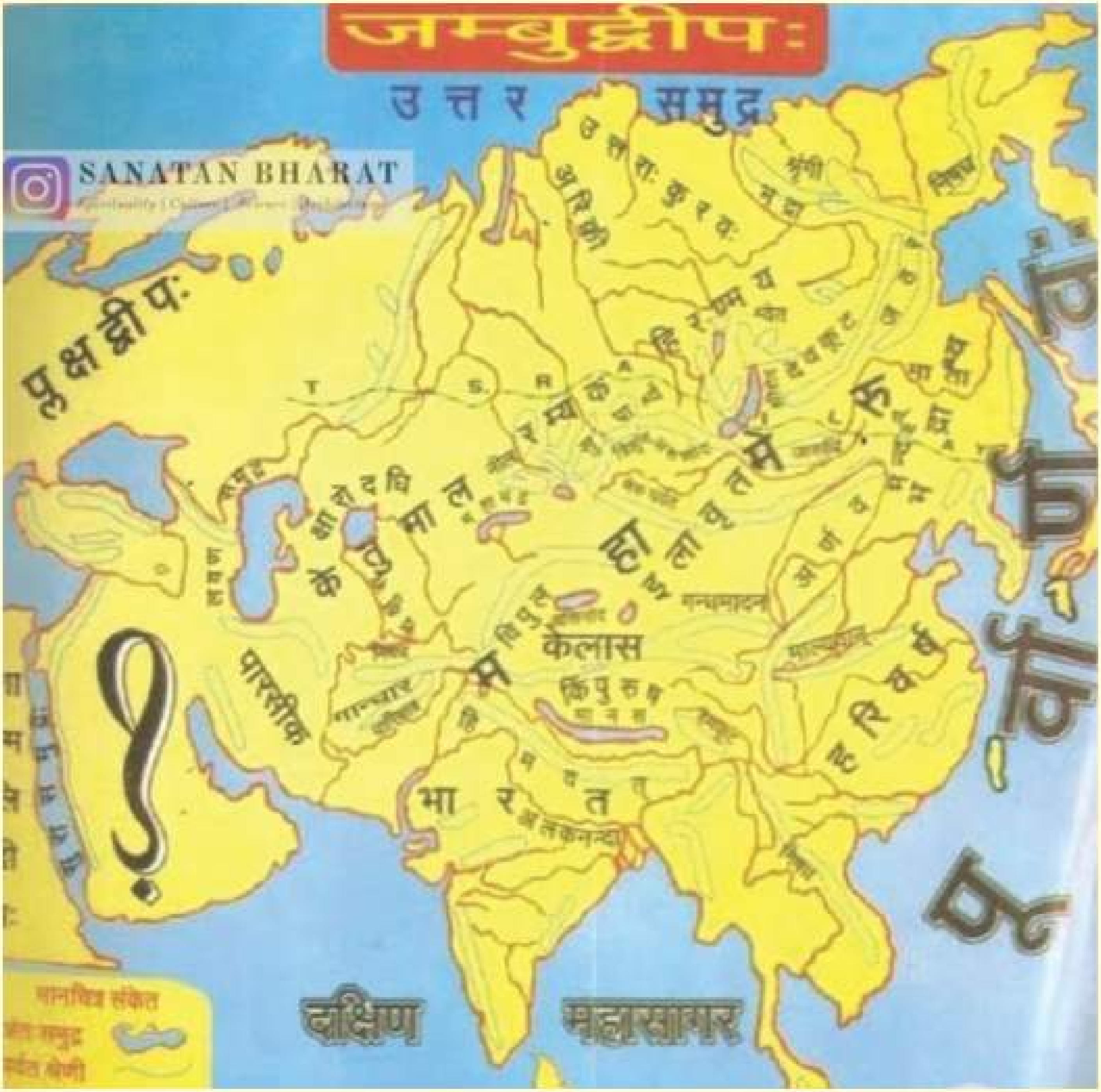

भारत वर्ष के 9 खण्डों के नाम अधिकांश पुराणों में हैं विष्णु पुराण (2/1/2732), स्कन्द पुराण प्रभास खण्ड (172/15) मत्स्य पुराण (114/615).

(1) इन्द्रद्वीप - दक्षिण पूर्व एशिया, इन्द्र पूर्व के लोकपाल थे. यहां आज भी इन्द्र से सम्बन्धित 50 वैदिक शब्द प्रचलित हैं. गरुड़ के नाम पर कम्बोडिया का केंद्रीय जिला वैनतेय है.

(2) कशेरु बोर्नियो, सेलेबीज, फिलीपीन.

(3) ताम्रपर्ण तमिलनाडु के निकटवर्त्ती सिंहल (श्रीलंका).

(4) गभस्तिमान पूर्वी इंडोनेसिआ ।। पपुआ न्यूगिनी

आस्ट्रेलिया का भी भाग था, जहां की गभस्ति नदी को शक द्वीप में कहा गया है.

(5) नाग द्वीप अण्डमान निकोबार से पश्चिमी इण्डोनेसिया तक. नाग का अर्थ हाथी भी है. हाथी की सूंड जैसा नक्शे में आकार होने के कारण इंडोनेसिया को शुण्डा द्वीप भी कहते थे.

(6) सौम्य उत्तर में तिब्बत.

(7) गंधर्व अफगानिस्तान, ईरान.

(8) वरुण अरब, ईराक (वरुण पश्चिम के लोकपाल).

(9) भारत या कुमारिका खण्ड वर्तमान भारत, पाकिस्तान, बंगलादेश.

3. भारत के नाम

(1) भारत नाम के 3 कारण कहे जाते हैं (क) वेद के अनुसार भारत का अग्नि (अग्रणी, लौकिक नाम अग्रसेन) विश्व का भरण पोषण करता था. अत: उसे भरत कहते थे.

विश्व भरण पोषण कर जोई. ताकर नाम भरत अस होई.

(रामचरितमानस, बालकाण्ड)

वेदपुराण में 20 से अधिक उदाहरण हैंयजुर्वेद (11/16), ऋक् (1/161/14, 4/25/4, 10/2/1/5, 6/15/8,49, 13, 6/16/1, 4, 19, 45, 8/39/8 (कौषीतकि ब्राह्मण (3/2), शतपथ ब्राह्मण (1/4/2/2, 1/5/19/8), मत्स्य पुराण (114/5, 6, 15), वायु पुराण (45/76, 86)

(ख) ऋषभ देव के पुत्र भरत के नाम पर (प्राय: 9,500 ईपू) विष्णु पुराण (1/2/32), मार्कण्डेय पुराण (50/41 42) आदि.

(ग) दिलीप शकुन्तला पुत्र भरत के नाम पर महाभारत, आदि पर्व (78/127131), अग्नि पुराण (278/56), स्कन्द पुराण (7/1/172/112), शतपथ ब्राह्मण (13/5/4/1113) ऐतरेय ब्राह्मण (8/23).

(2) अजनाभ वर्ष - विश्व सभ्यता के केंद्र रूप में यह अजनाभ वर्ष था. अज-अजन्मा भगवान, उनकी नाभि मणिपुर चक्र, उससे ब्रह्मा आ ब्रह्म देश. इसके शासक जम्बूद्वीप के राजा अग्नीध्र के पुत्र नाभि थे (विष्णु पुराण, 2/1/151518).

(3) हिमाह्वय या हिमवत वर्ष - इसका वर्ष पर्वत हिमालय होने से यह नाम है. वर्ष पर्वत का अर्थ वर्षा का प्राकृतिक क्षेत्र जो देश या वर्ष कहलाता है. (विष्णु पुराण (2/1/27) आदि.

(4) इन्दुमण्डल या विन्दुविन्दु सरोवर (मानसरोवर) से समुद्र तक का क्षेत्र होने से विंदु देश है (स्कंद पुराण, 7/1/172/10, कूर्म पुराण, 46/28). आकाश में भी विंदु से सृष्टि हुई. भारत के विंदु क्षेत्र (तिब्बत) से 2 दिशाओं में नदियों का विसर्ग हुआ। पश्चिम में सिन्ध नद सिन्ध सागर (अरब सागर) तथा पूर्व में गंगा ब्रह्मपुत्र गंगासागर या ब्रह्मा का कमण्डल (क-जल) में लीन होती हैं. इन समुद्रों तथा भारत समुद्र तक विंदु देश हुआ. हुएनसांग के अनुसार (भारत यात्रा, अध्याय 2) भारत को 3 कारणों से इन्दु (चन्द्र) कहते थे (क) भारत की उत्तर सीमा अर्ध चन्द्र की तरह है, (ख) हिमालय चन्द्र की तरह ठण्डा है, (ग) चन्द्र की तरह भारत विश्व को ज्ञान का प्रकाश देता है (भारत -भा या प्रकाश में रत). इंदु का उच्चारण ग्रीक लोग ठीक से नहीं कर पाते तथा इंडे कहते हैं। इससे इंडिया हुआ है.

(5) कुमारिका खंड मुख्य भारत खंड अधोमुख त्रिकोण है जो हर पुराण में लिखा है. पर 1750 तक यूरोपीय यात्री इसे चौकोर कहते थे. अधोमुख त्रिकोण शक्ति का प्रतीक है, उस पर अर्ध चंद्राकार हिमालय मिलाने से वह प्रचलित प्रेम चिह्न

होता है. शक्ति का मूल रूप कुमारी होने से भारत को दक्षिण की तरफ से देखने पर कुमारिका खंड कहते हैं. इसके दक्षिण का ध्रुव तक समुद्र भी कुमारिका खंड (समुद्र) हैतमिल काव्य शिलप्पाधिकारम.

(6) हिन्दुस्थान -बिंदु से इंदु, उससे हिंदू हुआ यह एक मत है. एक अन्य परिभाषा है - हीनं दूषयति इति हिंदू. जो नीच कर्म की निंदा करता है, वह हिंदू है. भविष्य पुराण, प्रतिसर्ग पर्व (3/2/9 21) के अनुसार 19 ई. में विक्रमादित्य के निधन के बाद भारत पर चीन, तातार, शक, बाह्लीक, खुरज (कुर्द), रोम, कामरूप (स्मरखण्ड) ने आक्रमण किया था. उनको पराजित कर विक्रमादित्य के पौत्र शालिवाहन ने सिंधु नदी को भारत की मर्यादा घोषित की और इसे सिंधुस्थान कहा. इससे हिंदुस्थान हुआ. अन्य वैदिक मत है कि पृथ्वी गो रूप है (ग्रीक में भी गैया), इस गो का पालन तथा भक्ति करने वाले हिंदू हैं. यह दो शब्दों-हिंकृण्वती (हिंकार करने वाली) तथा दुहाम (दुहा)के प्रथम अक्षरों से बना है. (ऋक् मन्त्र, 1/164/27, अथर्व, 7/73/8 की पारस्कर गृह्य सूत्र 1/18/34 में व्याख्या). गोरूपी यज्ञ से पालन यजुर्वेद के प्रथम मंत्र में विस्तार से है.

4. सनातन भारत (1) स्वायम्भुव मनु के समय से प्रसिद्ध. मेगास्थनीज आदि ने भी लिखा है कि भारत एकमात्र देश है, जहां कोई बाहर से नहीं आया (इंडिका, पारा 38).

(2) हिमालय से रक्षा, हिमालय के कारण भारत हिमयुग तथा जल प्रलय के चक्रों से अप्रभावित रहा और यहां कृषि आदि उत्पादन होता रहा.

(3) विविधता भारत में विश्व के सभी प्रकार के वन क्षेत्र और वनस्पति हैं. अत: यहां समन्वय का अभ्यास है.

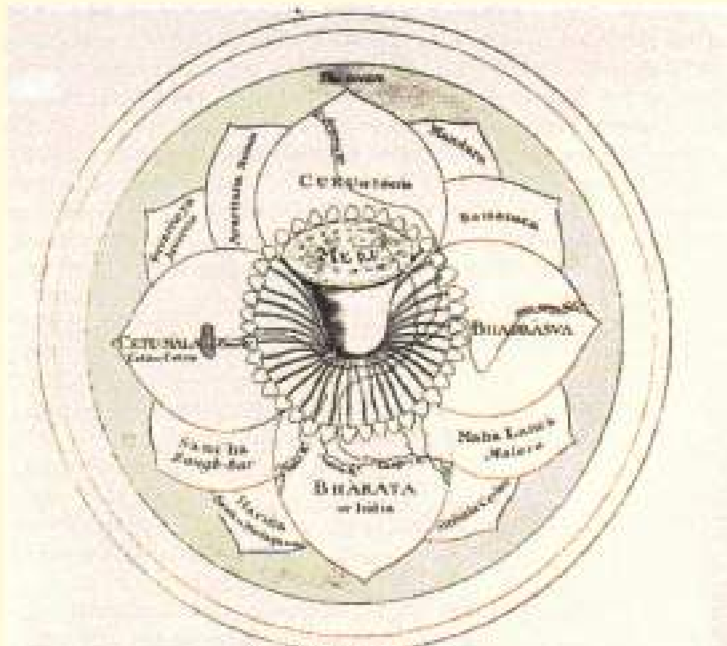

The Worldly Lotos

(4) सनातन धर्मसनातन पुरुष या ब्रह्म की भक्ति. यहां सनातन सत्य का पालन होता है, पैगम्बरों की इच्छा अनुसार नियम नहीं बदलते.

(5) यज्ञ संस्था यज्ञ द्वारा उत्पादन होता है. एक यज्ञ द्वारा अन्य यज्ञों का समन्वय कर भारत की उन्नति हुई है (पुरुष सूक्त, 16). इसके विपरीत असुर बल (असु) द्वारा धन लूटते थे. ईसाई तथा इस्लाम मतों में नियम था कि लूट का 1/5 भाग पोप या खलीफा को दें- इसे माल-ए-गनीमत कहते थे.

5. देव संस्था (1) देवी रूपदेवी अथर्व शीर्ष में देवी ने अपने को राष्ट्री संगमनी कहा है. इसके आधार पर बंकिम चंद्र ने वंदेमातरम् गीत लिखा था. त्रिकोण के रूप में इसके 3 कोने हैं-काली, सरस्वती, लक्ष्मी. 9 दुर्गा की तरह भारत वर्ष के 9 खण्ड हैं. अन्य प्रकार से इसमें 52 या 108 शक्ति पीठ हैं.

(2) शिव रूप में 12 ज्योतिर्लिंग हैं. सिख मत में भी गुरुनानक रूप में भारत की कल्पना है, उनके खाट, दातून आदि के नाम से स्थान हैं. ■

भगवद गीता से पहुंचें अपने सर्वोच्च स्तर तक

ऋषभ मिश्रा

भगवद गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने हमें यह संदेश दिया है कि हमें किस प्रकार अपने ऊपर कार्य करना चाहिए, साथ ही मनुष्य जीवन जो कि हमें अति दुर्लभता से प्राप्त हुआ है उसे कैसे दिव्य बनाया जाए और इसे अपने सर्वोच्च स्तर तक पहुंचाया जाए, भगवान् श्रीकृष्ण कहते हैं

'ममैवांशो जीवलोके जीवभूत: सनातन:' ||15.7||

यानी यह जीवात्मा मेरा ही सनातन अंश है. इस नाते जो दिव्य गुण भगवान में है वो सभी गुण हमारे अंदर भी हैं. फिर ऐसा क्यों है कि कुछ लोग साधारण स्तर से ऊपर उठकर देवतुल्य स्तर तक पहुच जाते हैं जैसे कि स्वामी विवेकानंद, स्वामी दयानंद सरस्वती, श्रील प्रभुपाद जी इत्यादि, तो वहीं अधिकांशत: लोग साधारण ही बने रह जाते हैं और कुछ लोग तो साधारण स्तर से भी नीचे स्तर तक गिर जाते हैं. इसके उत्तर में ऊपर दिए गए श्लोक में भगवान श्रीकृष्ण आगे कहते हैं

'मन:षष्ठानीन्द्रियाणि प्रकृतिस्थानि कर्षति' ||15.7||

यानी प्राणी अपने मन और इन्द्रियों द्वारा भगवान की बनाई हुई प्रकृति में ही आकर्षित बना रहता है तथा कभी भी अपने सर्वोच्चतम स्तर को प्राप्त नहीं कर पाता है. यहां पर एक सहज प्रश्न उठता है कि मनुष्य का सर्वोच्चतम स्तर क्या है? इसके बारे में विद्वानों में कई मत हैं. कोई इसे स्वयं का ज्ञान होना बतलाता है, तो कोई इसे आत्मिक ज्ञान अथवा बोध प्राप्त करना कहता है. दरअसल सर्वोच्चतम स्तर वह 'परम आनंद' की तृप्त अवस्था है जहां पहुंचकर फिर कुछ भी प्राप्त करने की इच्छा न रह जाए.

यहां प्रश्न उठता है कि उस स्तर तक हम लोग कैसे पहुंच सकेंगे? क्योंकि हमें तो संसार में ही रहना है और अपने कर्तव्यों, कर्मों का निर्वाहन करना है. तो क्या कोई ऐसी युक्ति नहीं है जिससे हम अपना कर्त्तव्य कर्म करते हुए उस स्तर को पा सकें? क्या हम लोग कर्त्तव्य कर्मों को करते हुए परम आनंद की सर्वोच्चतम अवस्था को प्राप्त कर सकते हैं? यदि 'हां तो कैसे? इस प्रश्न के उत्तर में भगवान श्री कृष्ण कहते हैं.

'अनाश्रितः कर्मफलं कार्यं कर्म करोति यः' ||6.1||

यानी मनुष्य को कर्मफल का आश्रय न लेते हुए, करने योग्य कर्तव्य कर्म को करना चाहिए, और कर्म को किये बिना (अक्रियाः) यह संभव नहीं है.

भगवान हमें स्पष्ट सन्देश देना चाहते हैं कि कर्म के परिणाम पर नहीं टिकना है क्योंकि कर्म के परिणाम की महत्वाकांक्षा हमें कर्म करने के आनंद से वंचित कर देती है. भगवान् श्री कृष्ण कहते हैं कि कर्म के परिणाम पर हमारा अधिकार भी नहीं है.

'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन' ||2.47||

हमारा अधिकार तो सिर्फ कर्म को करने तक ही सीमित है, और इस बात को भूलकर यदि हम परिणामों पर टिकते हैं तो उसके दो बड़े नुकसान हमें उठाने पड़ते हैं. पहला हम अपने कर्म (कार्यों) को अच्छे से नहीं कर सकेंगे क्योंकि इस बात का भय और आशंका हमेशा हमारे दिमाग में बनी रहेगी कि इसका परिणाम हमारे मुताबिक होगा या नहीं जिससे हम अपने कर्म में अपना सौ फ़ीसदी नहीं दे पाएंगे. और दूसरा नुकसान जो हमें उठाना पड़ता है कि यदि परिणाम हमारे मुताबिक न आया तो हम निराशा, हताशा और यहां तक कि अवसाद (जिसे आजकल लोग 'डिप्रेशन' कहते हैं) में चले जाते हैं और खुद को शक्तिहीन महसूस करने लगते हैं.

कर्त्तव्य कर्म जिसे भगवान् 'कार्यं कर्म' कह रहे हैं वह है कि एक विद्यार्थी के लिए मन लगाकर अध्ययन करना, शिक्षक के लिए अपने विद्यार्थियों को उचित शिक्षा, ज्ञान और संस्कार देना, डॉक्टर के लिए अपने मरीजों की निःस्वार्थ भाव से सेवा करना, व्यवसायी के लिए लोगों को लाभ पहुंचना तथा उसका थोड़ा अंश खुद के लिए उपभोग में लेना, एक भक्त का कर्त्तव्य कर्म अपने भगवान् की सेवा सुश्रुषा करना, गृहस्थ के लिए घर का पालन पोषण करना. इसके अतिरिक्त जिस कार्य को करने से हमारे अंदर ग्लानि, अथवा अपराध बोध उत्पन्न हो ऐसे सभी कर्म, कर्त्तव्य कर्म अथवा 'कार्यं कर्म' की श्रेणी में नही आते हैं. हमें ये पता होते हुए भी कि आवश्यक कर्म क्या हैं इसके बावजूद हम इसमें खुद को अच्छी तरह से नहीं लगा पाते और खुद को सर्वोच्चतम स्तर तक पहुंचा पाते हैं. इसी के उत्तर में भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं

'बन्धुरात्मात्मनस्तस्य येनात्मैवात्मना जितः अनात्मानस्तु शत्रुत्वे वर्तेतात्मैव शत्रुवत' ||6.6||

यानी जिस जीवात्मा द्वारा मन और इन्द्रियों सहित यह शरीर जीता हुआ है (यानी हम इससे जो कराना चाहें ये वही करे) उस जीवात्मा का वह स्वयं ही मित्र है अन्यथा वह स्वयं का ही शत्रु है. यहां भगवान अर्जुन के माध्यम से हमसे कह रहें हैं कि यदि मन और इन्द्रियां कर्तव्य कर्म से विमुख होकर सांसारिक द्रव्यों के भोग में लगेंगी तो यही मनुष्य के पतन का कारण भी बनेंगी और मनुष्य को नीचे गिराने में भी सक्षम हैं (यानी ये शत्रुवत कार्य करेंगी).

इससे बचने के लिए और स्वयं को सर्वोच्चतम स्तर तक पहुंचाने के लिए भगवान् श्रीकृष्ण इसका मार्ग भी हमें बताते हैं

'अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते' ||6.35||

यानी इस चंचल मन को अभ्यास और वैराग्य से (यहां वैराग्य से मतलब कर्मों के परिणामों की चिंता किये बिना कर्म करना है) नियंत्रित किया जा सकता है और भगवान आगे इसी को उत्तम आनंद की प्राप्ति का रास्ता भी बताते हैं

'प्रशान्तमनसं ह्येनं योगिनं सुखमुत्तमम्' ||6.27||

जो कि हमारा इस जीवन में सर्वोच्चतम लक्ष्य होना चाहिए.■

सौदागर

सूरज प्रकाश

एक देश था. उसमें बहुत सारे शहर थे और बहुत सारे गांव थे. गांव वाले अक्सर अपनी खरीदारी के लिए आस-पास के बड़े शहरों में जाया करते थे.

ऐसे ही एक शहर के एक बाजार में बहुत सारी दुकानें थीं. वहां एक ऐसी दुकान भी थी जहां पर ऐसी सारी चीज़ें मिलती थीं जिन पर एमआरपी नहीं लिखा होता था, जैसे साइकिलें, जूते, टोपियां, लालटेन और कपड़े आदि. ये दुकान दो भागीदार मिल कर चलाते थे. अक्सर भागीदार बदलते भी रहते लेकिन धंधा और धंधा करने का तरीका वही रहता. मकसद एक ही रहता, ग्राहक को बेवकूफ बना कर लूटना.

दुकानदारी करने का उनका तरीका बहुत मजेदार था. वे बारी-बारी से दुकान पर बैठते. जब भागीदार नंबर एक दुकानदारी करने बैठता तो भागीदार नंबर दो सामने वाली चाय की दुकान पर जाकर बैठ जाता. जब कोई ग्राहक कुछ खरीदने आता और पहला भागीदार उसे लगभग निपटा चुका होता तो दूसरा भागीदार टहलता हुआ आता, ग्राहक से दुआ सलाम करता और पहले वाले भागीदार से पूछता- 'साहब जी को क्या बेचा?'

वह बताता 'जी, ये माल बेचा है. तब भागीदार पूछता- 'कितने में दिया?' तो पहला बतलाता कि इतने रुपए में सौदा हुआ है.

तब दूसरा वाला सिर पीटने का नाटक करता, कहता- 'लुटा दे, लुटा दे दुकान'. इतने में तो हमने भी नहीं खरीदा है. तेरा यही हाल रहा तो हमें एक दिन दुकान बंद करके भीख मांगनी पड़ेगी.

तब पहला वाला कहता- 'मुझे नहीं याद रहा कि हमने कितने में खरीदा है लेकिन अब हम सौदा कर चुके हैं तो हम ग्राहक को इसी कीमत दे देंगे आप चाहें तो हमारे हिस्से के लाभ में से ये नुकसान काट लेना'.

दोनों झगड़ा करने का नाटक करते.

पहला वाला भागीदार ग्राहक को समझाता - 'आप तो ले जाओ जी सामान तय कीमत पर. मैं इनसे निपट लूंगा. अपने हिस्से का मुनाफा छोड़ दूंगा'.

ग्राहक खुशी-खुशी सामान लेकर चला जाता कि उसे बहुत सस्ते में सामान मिल गया है.

हर ग्राहक के साथ यही तरीका अपनाया जाता.

अगली बार दुकान पर भागीदार नंबर दो बैठता और पहला वाला सामने वाली चाय की दुकान पर जा बैठता और ग्राहक के आने पर यही नाटक करता.

कहानी का अगला मोड़ ये है कि जब चीज़ बिक रही होती थी तो दोनों पार्टनर ग्राहक से विनती करते थे कि किसी को बताना मत कि कितने की ली है, इस भाव पर हम और नहीं दे पायेंगे.

वे हमेशा यही नाटक करके इस तरीके से ग्राहकों को उल्लू बनाते रहते और हर बार ग्राहक समझता कि वह भागीदारों के आपसी झगड़े में सामान सस्ते में ले आया है.

वे बेच कुछ भी रहे होते, टोपी हर बार ग्राहक को ही पहनाई जाती.

डिस्क्लेमर : यह एक विशुद्ध बोध कथा है जिसके सारे पात्र काल्पनिक हैं. इस बोध कथा का उस देश से कोई लेना देना नहीं है जहां पर राजनीतिक पार्टियां आपस में भागीदारी करके वोटरों को लगातार कई वर्षों से टोपियां पहना रही हैं और वोटर हर बार भ्रम में जीता है कि शायद इस बार कुछ तो उसके हाथ लगा है.

सावन में विरहिन

सुनील श्रीवास्तव

विरहिन से रूठ गया गीत इस सावन में,
पड़े नहीं पिया पांव सूने घर आंगन में.

***

बरखा की बूंद मन दुखाती है,
विदेशी की याद बहुतआती है,
मत कर ठिठोली सखी री अब,
जानबूझ क्योंकर इतना सताती है.

***

हरी-हरी चूड़ियां मत लाना चुड़िहारिन,
ठुमुक ठुमुक जाना मत कुएं पर पनिहारिन,
झूले के पास मत जाने की जिद करना,
कान्हा मत आना तुम बन कर के गोदहारिन.

***

नयनों में पलकों से छिपा कर रखा है उन्हें,
निकलने न दूंगी लोर बहा कर उन्हें,
पायल, करधनी गहना न सोहे अब,
केवड़िया की ओट से जोहती हूं रोज उन्हें.

***

बखरी मुंडेरा पर पपिहरा न गाओ तुम,
अगिन करेजवा का जिन भड़काओ तुम,
मौसम ने आज हमें विरहिन बनाया है,
बरसो न बदरा अब अंगना हमारे तुम.

कजरी और झुलवा ने मन को बेचैन किया,
यादों की छतरी ने दिन को भी रैन किया,
मेहंदी लगी हाथों को कई बार देखा है,
पतिया तुम्हारी पढ़ जियरा को चैन दिया.

***

इस सावन आकर तोड़ दो हमारा भरम,
कुछ नहीं बोलूंगी खाती हूं अपनी कसम,
जी भरकर देखूंगी अब तो तरसाओ मत,
अपनी पगलिया को एक बार देख बलम. ■

प्रतिभा चौहान

1. क्या आप जीवित हैं

युद्धों के बीच
बचता है सिर्फ सन्नाटा
और अंतहीन कारुणिक रुदन,
संवेदनहीनता की हद तक
कोई दीवार ढहती जाती है
प्रेम और विश्वास की देहरी पर
उपजता है चीत्कार
उगता है
भयावह सन्नाटों का जंगल.
वे जो
मिलकर लड़ते हैं
मिलाते हैं हाथ
मिलते हैं गले
और बचे रह जाते हैं
शेष मारे जाते हैं.

2. क्या बचेगा इसके बाद

क्या समय को
मात देना चाहते हो युद्ध से?
पा लेना चाहते हो सब कुछ
समय से पूर्व ही?
सुनो!
समय से पूर्व सब कुछ पाने की चाहत में
पाने जैसा कुछ नहीं मिलता
बल्कि बढ़ती जाती है
अधिक खोने की संभावना
और अंततः
तुम खो देते हो वह सब कुछ
जो है तुम्हारे पास.

3. युद्ध

युद्ध सांस लेता है
शांति के दुखते पाओं
और टूटे दिलों की दरारों में
और
उसे पोषित करने वाले
करते हैं प्रतीक्षा
किसी माकूल समय की.

4. एक बच्ची की डायरी

एक डायरी में
लिखती है एक बच्ची
घरों के सामने हुए
दंगों के स्याह संस्मरण
जिनकी स्याही के बीच-बीच में कहीं पर
पड़े हैं कुछ धुंधले से धब्बे,
उन धब्बों में
उसके आंसुओं के भीतर
छिपी आह को सुनना,
शायद
समझ आ सके कुछ ज्यादा,
क्योंकि जितना सह लेता है आदमी
उतना लिख नहीं पाता.

देश

त्रिलोक सिंह ठकुरेला

हरित धरती,
थिरकतीं नदियां
हवा के मदभरे संदेश,
सिर्फ तुम भूखंड की सीमा नहीं हो देश.

भावनाओं, संस्कृति के प्राण हो,
जीवन कथा हो,
मनुजता के अमित सुख,
तुम अनकही अंतर्व्यथा हो,
प्रेम, करुणा,
त्याग, ममता,
गुणों से परिपूर्ण हो तपवेश.
सिर्फ तुम भूखंड की सीमा नहीं हो देश.

पर्वतों की श्रृंखला हो,
सुनहरी पूरब दिशा हो,
इंद्रधनुषी स्वप्न की
सुखदायिनी मधुमय निशा हो,
गंध, कलरव,
खिलखिलाहट, प्यार
एवं स्वर्ग सा परिवेश.
सिर्फ तुम भूखंड की सीमा नहीं हो देश.

तुम्हीं से यह तन,
तुम्हीं से प्राण, यह जीवन,
मुझ अकिंचन पर
तुम्हारी ही कृपा का धन,
मधुरता, मधुहास,
साहस,
और जीवन-गति तुम्हीं देवेश,
सिर्फ तुम भूखंड की सीमा नहीं हो देश. ■

रावणहत्था : राजस्थान के लोकगीतों की जान

पवन चौहान

उसकी धुन सबको मंत्रमुग्ध कर देती है. उससे झरने वाली स्वर लहरियां एक अजीब-सा सम्मोहन उत्पन्न करती हैं. उससे निकलने वाली धुन शब्द बनकर वातावरण को अपने मोहपाश में बांध देती है. आप समझ ही गए होगें हम किसकी बात कर रहे हैं ? जी हां, हम बात कर रहे हैं रावणहत्था की. रावणहत्था एक ऐसा वाद्ययंत्र है जो राजस्थान के लोकगीतों में मिठास भर देता है.

रावणहत्था सारंगी का ही एक रुप है. यह राजस्थान का एक विशेष वाद्ययंत्र है जो राजस्थान के लोकसंगीत की पहचान करवाता है और यहां के लोकगीतों में जान फूंकता है. इसके बगैर राजस्थान के लोकगीत जैसे अपाहिज से जान पड़ेगें. शादी हो या जन्मदिन या अन्य कोई त्यौहार यह हर मौके पर खूब बजाया जाता है.

रावणहत्था की लम्बाई लगभग दो फुट होती है. इसके एक तरफ नारियल का खोल लगा होता है जिसके ऊपर खाल या प्लास्टिक की एक पतली परत चढ़ी रहती है. इस नारियल के खोल के साथ एक बांस का डंडा लगाया गया होता है. इसी बांस की डंडी पर लगभग दो-ढ़ाई ईंच लंबाई के हुक जैसे लगाए गए होते हैं जिन्हें 'मोरनी' कहा जाता है. इन मोरनियों पर तारें कसी जाती हैं जो सुरों को अंजाम देती हैं. इन मोरनियों को ये लोग स्वंय तैयार करते हैं. मोरनियां

सिल्वर या लकड़ी की बनाई गई होती हैं. इनको सुंदरता प्रदान करने के लिए कारीगर इन पर अपने हिसाब से डिजाइन उकेरता है.

इन मोरनियों को बांस पर इस हिसाब से लगाया जाता है ताकि कोई भी तार एक दूसरे को छू न पाए. स्वरों का ध्यान रखते हुए ही इनके उचित स्थान का चयन भी किया जाता है. यह प्रक्रिया इसमें सबसे ज्यादा पेचीदा और समय की काफी खपत करने वाली है. मोरनियों के साथ ही होते हैं 'मोरने' जो लकड़ी के होते हैं. ये भी तारों की कसावट को अंजाम देते हैं. दोनों में फर्क सिर्फ इतना है कि मोरनी लंबरूप और मोरना क्षैतिज रूप में लगाया जाता है. इनके साथ लगी तारों की संख्या को भी कलाकार अपने हिसाब से तय करता है. ये सोलह से लेकर उन्नीस तक रहती है.

रावणहत्था से स्वर निकालने का कार्य करती है 'गज' जिसे 'दनी 'कहकर भी पुकारा जाता है. यह एक छोटे से धनुष के

आकार की होती है. जिस पर चढ़ी धागे की प्रत्यंचा को इन तारों पर रगड़कर स्वर को जीवंत रुप दिया जाता है. कलाकार भक्त के अनुसार 'रावणहत्था हम स्वंय घर पर ही तैयार करते हैं. इसको तैयार करने में लगभग बीस से तीस दिन तक का समय लग जाता है. इस पूरी प्रक्रिया में कलाकार के हुनर का भी परीक्षण होता है.'

रावणहत्था के कलाकार लोगों का खूब मनोरंजन करने के साथ-साथ अपनी कमाई को भी अंजाम दे रहे हैं. 'देरा लदीया जाओए दीवाना/थारोड़ी मारवाड़ में/ एक लड़ी मत छोड़े दीवाना/परदेसा मन जाओए दीवाना'और 'बना रे बागा में जो लगा ले/ताहरे बने ने झूला दीजो/बना छैल भंवर सा' तथा 'केसरिया बालम पधारो म्हारे देश' जैसे ठेठ राजस्थानी लोकगीतों के साथ-साथ फिल्मी गीतों को जब ये कलाकार रावणहत्था पर बजाते हैं तो ऐसा समा बांधते हैं कि सुनने वाला सम्मोहित-सा हो जाता है.

ये कलाकार आपको शहर, गांव, बस-स्टैंड, रेलवे-स्टेशन या अन्य सार्वजनिक स्थलों पर अपनी कला का जादू बिखेरते अक्सर नजर आ जाएंगे. यह इनकी रुटीन में शामिल है. राजस्थान के हनुमानगढ़ जिला के सोनू के अनुसार, 'मैंने बचपन से ही रावणहत्था अपने पिता जी से सीखना शुरु कर दिया था. इसकी धुन मुझे आकर्षित करती थी. मैंने शौक शौक में फिर इसे बजाना भी सीख लिया. इसे हाथ में लेते ही लगता है कि यह बहुत ही आसान है लेकिन यह एक कठिन तपस्या है जिसका फल काफी रियाज़ के बाद मिलता है. मुझे इसे बजाने में बहुत आनंद मिलता है. यह हमारी लोककला का एक जीवंत उदाहरण है. परंतु मुझे इस बात का बड़ा दुख होता है कि आज की पीढ़ी इसे सीखने से परहेज कर रही है. वे इसे हाथ में पकड़ने पर ही शर्म महसूस करते हैं. हमारे इलाके की बात करें तो रावणहत्था को बजाने वाले अब बहुत कम लोग रह गए हैं. रावणहत्था हमारी पहचान है लेकिन वर्तमान परिस्थितियों को देखें तो इस कला का वजूद खतरे में पड़ गया है.'

सोनू की पत्नी सुमन पति के साथ इस कला का हिस्सा बन जाती है. सोनू रावणहत्था बजाता है और सुमन इन सुरों को अपनी आवाज में पिरोती चली जाती है. सुमन बताती है, 'रावणहत्था हमारे लोकगीतों में जान डालता है. यह हमारा खानदानी पेशा है जो हमें मान-सम्मान के साथ-साथ दो जून की रोटी मुहैया करवाता है.'

यह बात सत्य है कि रावणहत्था को सीखने वालों की संख्या में पिछले कुछ वर्षों में काफी गिरावट आई है. इससे रावणहत्था के अस्तित्व पर खतरे के बादल मंडराने लगे हैं. यदि यही सब चलता रहा तो वह दिन दूर नहीं है जब रावणहत्था अपनी अंतिम सांस ले लेगा. इस वाद्य यंत्र के मिटते ही राजस्थान के लोकसंगीत के इतिहास से एक अमूल्य पत्ना गायब हो जाएगा और ये इस लोकसंगीत को अपाहिज बनाने के साथ-साथ इस समाज की बेशकीमती यादों को अपनी कब्र में समाहित कर लेगा. इस सब के लिए हम स्वंय ही जिम्मेवार होंगे. तो फिर देर किस बात की है, आइए दृढ़ संकल्प कर लें कि हम रावणहत्था के वजूद को मिटने नहीं देंगें ताकि इसकी मीठी, प्यारी सी धुन यूं ही हमारे कानों में गूंजती रहे और हमें राजस्थान के लोकसंगीत से आत्मसात करवाती रहे. ■

नमन, नमन, नमन तुझे

सोनरूपा विशाल

तपस्विनी, मनस्विनी, यशस्विनी वसुंधरा.
नमन, नमन, नमन तुझे स्वदेश की परम्परा.
हिमाद्रि माथ पर सजे,
हरा भरा सुवेश है.
अपार ईश सम्पदा,
विशेष हर प्रदेश है.
सुबोधिनी, अमोधिनी, विरोधिनी, ऋतम्भरा,
नमन, नमन, नमन तुझे स्वदेश की परम्परा.
समन्वयी स्वभाव है,
अटूट संविधान का.
अजस्त्र भारतीयता,
स्वरूप है विहान का.
त्रिरंगिनी, अभंगिनी, उमंगिनी, निरंतरा,
नमन, नमन, नमन तुझे स्वदेश की परम्परा.
अदम्य शौर्य की ध्वजा,
अनंतता है ज्ञान की.
कहानियां अमर है मातु,
तेरे स्वाभिमान की.
सुहासिनी, प्रभासिनी, उजासिनी, अलंकरा.
नमन, नमन, नमन तुझे स्वदेश की परम्परा.

जय हिंद, जय भारत

डॉ. सीमा विजयवर्गीय

1.

वतन पर जां मेरी कुर्बान है, जय हिंद, जय भारत.
मेरा दिल मेरा हिंदुस्तान है, जय हिंद, जय भारत.
जहां के इस फ़लक को तुम ज़रा अब गौर से देखो,
मेरी माटी की इक पहचान है, जय हिंद, जय भारत.
यहां वेदों, पुराणों की सदा वाणी हुई निसृत,
यहां कण-कण में गीता-ज्ञान है, जय हिंद, जय भारत.
रखेंगी याद सदियां भी, उसे कैसे भुलाएंगी,
जो चेतक का यहां बलिदान है, जय हिंद, जय भारत.
कहां तक मैं करूं गुणगान इसका तुम बताओ अब,
ये मिट्टी सच में अमृत-खान है, जय हिंद, जय भारत.
मेरा ईमान, मेरा ज्ञान, मेरा ध्यान सब कुछ ये,
मेरा अभिमान और सम्मान है, जय हिंद, जय भारत.
खड़े हैं आज सीमा पर, तेरे बेटे तेरी खातिर
हथेली पर ही उनकी जान है, जय हिंद, जय भारत.

2.

जग के माथे का है टीका शान है मेरा वतन
क्या कहूं मैं खुद ये इक गुणगान है मेरा वतन.
मीर, ग़ालिब, फ़ैज़ का अरमान है मेरा वतन,
सूर, तुलसी, जायसी, रसखान है मेरा वतन.
कुंज गलियों के नज़ारे अब भी दिल में है बसे,
मुरली की इक तान बिन बेजान है मेरा वतन.
प्रेम का दीपक लिए सारे जहां में घूमता,
सबके दिल में जो बसा सम्मान है मेरा वतन.
ये शिवा का ओज है, सांगा के दिल की है तड़प,
मां के आंचल पर सदा कुर्बान है मेरा वतन.
ईद का भी चांद देखे, दौज का भी चांद ये,
होली-दीवाली भी क्या रमज़ान है मेरा वतन.
ज़र्रे-ज़र्रे में दया, रग-रग में इसके प्यार है,
सच तो ये ही है कि मेरी जान है मेरा वतन.

आज़ादी और नव-चेतना

आशीष शर्मा (इंडोनेशिया)

आज़ादी तेरी आन का सदक़ा,
मातृभूमि के मान का सदक़ा,
भारत मां की जय का नारा,
शंखनाद से हो जयकारा,
जन-जन जागे,
कण-कण जागे,
रोम-रोम में ज्वाला जागे,
बच्चा-बच्चा दे हुंकारा,
लाओ कहीं से वो चेतना,
नव-साधना, नव-प्रेरणा.
आज़ादी की राहों में,
कोई आंच न आने देंगे हम,
मर जाएंगे मिट जाऐंगे,
राष्ट न मिटने देंगे हम,
आज़ादी की ख़ातिर,
अपने प्राणों की कुरबानी दें,
देश की ख़ातिर जन्मे हैं,
और देश पे जान लुटा भी दें,
लाओ कहीं से वो चेतना,
नव-साधना, नव-प्रेरणा.
आज समय है एक हो जाएं,
जात भूल कर, प्रांत भूल कर,
एक भारत का बिगुल बजाएं,
आज समय है कुछ कर जाएं,
वीरों की अमर शहादत का,
अपने लहू से क़र्ज़ चुकाएं,
मली आज़ादी बलिदानों से,
आओ मिल कर शीष नवाएं,
लाओ कहीं से वो चेतना,
नव-साधना, नव-प्रेरणा. ■

आज़माइश अभी बाक़ी है

योगिता शर्मा (इंडोनेशिया)

बातों में, नारों में, तक़रीरों में,
हिंदुस्तान की बात करते हैं सब,
सच्ची मोहब्बत कितनों को,
ये आज़माईश अभी बाक़ी है.

अनेकता में एकता का जिक्र,
हर महफ़िल में,
अमल को कितने हैं तैयार,
ये आज़माइश अभी बाक़ी है.

इसकी मिट्टी में रंगने की बात,
हर कोई करता,
फ़ना होने को कितने हैं तैयार,
ये आज़माइश अभी बाक़ी है.

कौन है वो - मेरा अपना या पराया !
जिसने तिरंगे का अपमान किया,
ये देख कितनों के दिल सच में रोए,
ये आज़माइश अभी बाक़ी है.

मेरा मान और स्वाभिमान भी तू,
विदेश मेरी पहचान भी तू,
कब बनेगी तेरी पहचान हमसे,
ये आज़माइश अभी बाक़ी है. ■

राजस्थान की हरियाली तीज

कपिल जोशी

राजस्थान त्योहारों की धरती है. यहां समय-समय पर मनाये जाने वाले त्योहार व मेले आम जन-जीवन में नवीन उत्साह वह उमंगों का संचार करते हैं. भारतीय संस्कृति में पर्वों का विशेष स्थान रहा है. हमारे राजस्थान में एक कहावत प्रचलित है-

'तीज त्योंहारा बावडी,ले डूबी गणगौर'

यानी कि राज्य में श्रावण मास की शुक्ल तृतीया से त्योहारों का आगमन होता है तथा चैत्र शुक्ल तृतीया को त्योहारों का समापन हो जाता है. उसके बाद तीन महिने बड़े ही नीरस बीतते हैं. राज्य में यूं तो बहुत से त्योहार मनाये जाते हैं मगर उनमें तीज व गणगौर का स्थान महत्वपूर्ण है. तीज से ही वर्षा का प्रारंभ माना जाता है, भयंकर गर्मी से तपते मरूस्थल में छाये काले बादल नाचने पर मजबूर कर देते हैं. उमड़ते-घुमड़ते काले बादलों के बीच मयूरों का नाचना, कोयल का बोलना वह मरूस्थल के ऊंचे धोरों पर दौड़ते हुए मृग व झूला झूलती महिलायें इस त्योहार की शोभा बढ़ा देती हैं.

पौराणिक मान्यताओं के अनुसार माता पार्वती ने भगवान शिव को पति रूप में पाने के लिए इस व्रत का पालन किया था. परिणामस्वरूप भगवान शिव ने उनके तप से प्रसन्न होकर उन्हें पत्नी रूप में स्वीकार किया था. माना जाता है कि श्रावण शुक्ल तृतीया के दिन माता पार्वती ने सौ वर्षों के तप के उपरांत भगवान शिव को पति रूप में पाया था. इसी मान्यता के अनुसार स्त्रियां माता पार्वती का पूजन करती हैं. विवाहिता महिलायें व्रत रखती है, इस व्रत को अविवाहित कन्यायें योग्य वर को पाने के लिए करती हैं तथा विवाहित महिलाएं अपने सुखी दांपत्य की चाहत के लिए करती हैं.

विवाहित महिलाएं अपने मायके जाकर ये तीज का त्योहार मनाती हैं. जिन लड़कियों की सगाई हो जाती है, उन्हें अपने होने वाले सास-ससुर से सिंजारा मिलता है. इसमें मेहंदी, लाख की चूड़ियां, कपड़े मिठाई विशेषकर घेवर शामिल होता है. तीज पर हाथ-पैरों में मेहंदी भी जरूर लगाई जाती है. इसी दिन वृक्ष पूजा का भी विशेष महत्व है. ■

निष्कलंक महादेव

प्रियदर्शी व्यास

कहीं गहरी घाटियों में उतर कर, कहीं घने जंगलों में जाकर, कभी ऊंचे पहाड़ों पर चढ़ कर, तो कभी नाव से सागर या नदी में जाकर प्रकृति के अद्भुत नजारों के बीच स्थित मंदिर, सिद्ध तीर्थ आपने अवश्य ही देखे होंगे. भारत में भला ऐसे स्थानों की क्या कमी?

कई स्थल हैं जो बहुत प्राचीन हैं, सदियों से निरंतर श्रद्धा के केंद्र बने हुए हैं. कई स्थानों का ऐतेहासिक महत्त्व है तो कई के तार पुराणों से जुडे हुए हैं. परंतु एक ऐसी जगह भी है जहां किसी स्थल को देखने के लिए आपको समुंद्र में दूर तक चल कर जाना होगा. जी हां, चलकर, और वो भी तब जब समुद्र अपना जल पीछे ले जाए और आपको चलने के लिए रास्ता दे. ज्वार भाटा तो आप जानते ही हैं, बस यही प्रकृति का जादू है. आपको प्रतीक्षा करना होगी जब समुद्र स्वयम आपको रास्ता दे, तब तक.

भारत के गुजरात में भावनगर के समीप कोलयाक बीच पर अगर आप ज्वार के समय पहुंचेंगे तो समुंद्र की लहरें आपका स्वागत करेंगी और दूर समुंद्र में केवल एक ध्वजा पानी के ऊपर लहराती दिखाई देगी और जैसे-जैसे पानी उतरेगा, पहले एक स्तंभ दृष्टिगोचर होगा फिर धीरे-धीरे मंदिर.

समुंद्र में करीब डेढ़-दो किलोमीटर अंदर जाके एक पत्थर का बड़ा सा आधार (चबूतरा) बना है, जिस पर स्थित हैं पांच भिन्न आकार के शिवलिंग. कहा जाता है कि यह शिवलिंग पांडवों के द्वारा स्थापित किये गए थे. इसी आधार पर कुंड बने हैं, जिनमें से पानी लेकर शिवलिंग पर जल द्वारा (चढ़ाया) जा सकता है. यहीं पार्वतीजी की प्रतिमा और स्तंभ पर हनुमान जी भी विराजमान हैं.

आधार के दूसरे हिस्सों की तरफ समुंद्र उपस्थित रहता है. पंछियों का कलरव, लहरों का मधुर संगीत और पवन के स्वर के साथ इस मंदिर के दर्शन का आनंद विशेष है. बस याद रखिएगा कि ज्वार आने से पहले आप को वापस लौट जाना है.

इस मंदिर के संदर्भ में जो कथा प्रचलित है उसके अनुसार महाभारत के युद्ध के उपरांत पांडवों को ग्लानि हो रही थी. यह तो सब जानते ही हैं कि अर्जुन युद्ध के लिए तैयार नहीं थे और तब श्री कृष्ण ने गीता का उपदेश दे कर उनको अपना कर्तव्य करने को प्रेरित किया था. पांडवों ने अपना कर्तव्य पूर्ण किया लेकिन इस कर्तव्य पूर्ती में उनके हाथों जो मारे गए वे सभी थे तो स्वजन, गुरुजन ही. इसलिए ग्लानि का भाव सभी को परेशान कर रहा था. इसके हल के लिए पांडवों ने श्रीकृष्ण से प्रार्थना की.

कहते हैं कि श्रीकृष्ण ने पांडवों को एक काली ध्वजा देकर, एक काली गाय के पीछे जाने का आदेश दिया और बताया कि जहां पर दोनों का रंग सफेद हो जाए उस जगह पर ही पांडवों को तपश्चर्या करनी होगी. तो गाय के पीछे चलते-चलते वे सभी भारत के पश्चिम में इस तट पर पहुंचे. इस जगह पर पहुंचने के बाद गाय और ध्वजा का रंग सफेद हो गया. पांडवों ने तब यहां शिवलिंग स्थापित कर तपश्चर्या की. उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर महादेव जी ने पांडवों को निष्कलंक होने का वरदान दिया. तभी से इसे निष्कलंक महादेव के नाम से जाना जाता है. ■

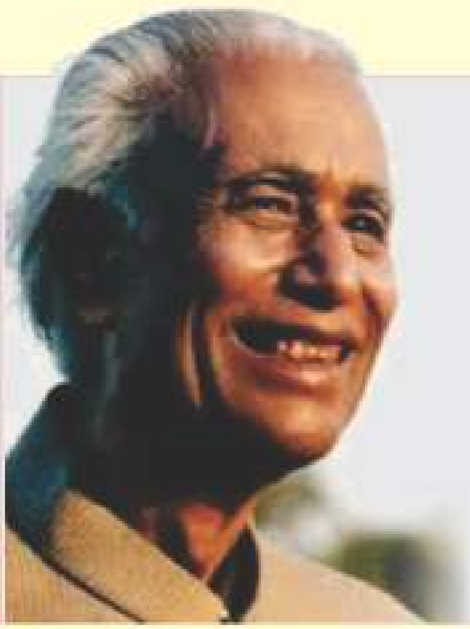

धर्मयुग और धर्मवीर भारती

राजशेखर व्यास

जब बहुत छोटा था तब से अपने पूज्य पिता पद्म भूषण पंडित सूर्यनारायण व्यास के आवास भारती-भवन में नवनीत, कादम्बिनी, ज्ञानोदय (पुराना) साप्ताहिक हिंदुस्तान, धर्मयुग, नईधारा जैसी अनेक पत्र-पत्रिकाएं उनकी टेबल पर सजी देखता और इंतज़ार यह रहता कि पूज्य पिता भोजन के लिये उस भव्य भवन की पहली मंज़िल पर जाएं और कैसे तब तक हम उन पत्र पत्रिकाओं को चाट जाएं.

पढ़ना क्या होता नौ साल के बच्चे को. कार्टून कोना ढब्बू जी और बच्चों की साहित्य सामग्री पढ़ते-पढ़ते कब बड़ों के साहित्य में घुसपैठ कर गये अब याद नहीं. हां इतना याद है कि 1972 में पूज्य पिता को अचानक ब्रेन हेम्ब्रेज हुआ और उनकी स्मृति चली गयी. अब वे ठहरे क्रांतिकारी और विक्रम संपादक. उन्हें रोज़ाना देश-विदेश के अख़बार पढ़े बग़ैर भोजन नहीं पचता था और इधर स्मृति ही चली गयी. पढ़ना-लिखना ही भूल गये. अब सवाल ये कि उन्हें अख़बार पढ़कर पत्र-पत्रिका पढ़कर कौन सुनाए? डॉक्टर शिव मंगल सिंह सुमन, डॉक्टर भगवतशरण उपाध्याय, वी श्री वाकणकर बालकवि बैरागी और प्रभाकर श्रोत्रिय जैसे प्यारे नाम उनके आस पास थे. सबने प्रयास किया. अंत में मुझ बालक का चयन हुआ और इस तरह मैं विश्व के एक महान जीनियस का, चाहे वे बीमार थे, थे तो महापुरुष (सुना था महापंडित राहुल जी की स्मृति भी अंतिम दिनों में चली गयी थी) का पी ए या ऐ डी सी हो गया.

अब सुबह स्कूल जाने से पहले नियमित उन्हें ढेर सारे अख़बार पढ कर सुनाता फिर दोपहर में आ कर ढेर सारे पत्र जो देश भर से आते, पढ़ कर सुनाता। उनमें अक्सर धर्मवीर भारती के पत्र देखता. पत्र जिनमें अक्सर कोई न कोई विषय लिखा होता कि इस विषय पर आप जैसे महान विद्वान विचारक का लेख चाहिये, कभी लिखते आपका स्वास्थ्य कैसा है, अख़बारों से पता चला आप अस्वस्थ हैं. अब इन पत्रों का उत्तर कौन दे 1972 से 1976 आते-आते इतना हो गया था कि पत्रोत्तर मैं देने लग गया था.

धर्मवीर भारती, कनुप्रिया के कवि, ठंडा लोहा के कवि और अंधा युग के नाटककार मेरे प्रिय तो थे ही. साहस कर लिखा- 'पिता जी अस्वथ्य हैं, आप आज्ञा करें तो मैं कुछ लिख भेजता हूं.'

'अवश्य', उत्तर आया और इसी दरम्यान एक और दिलचस्प घटना घट गयी. मध्य प्रदेश शासन ने पंडित सूर्य नारायण व्यास का राजकीय अभिनंदन करने का ठान लिया. इस से पूर्व यह आयोजन केवल एक बार पहले हुआ था माखन लाल चतुर्वेदी के सम्मान में. तो तय यह हुआ कि इस अवसर पर पंडित सूर्यनारायण व्यास की प्रतिनिधि रचनाओं का प्रकाशन हो. फिर वही प्रश्न उठा कि संपादन कौन करे? सबको लगा डॉक्टर सुमन, भगवत शरण जी या वाकण कर किसी का नाम लेंगे पंडित जी. तत्कालीन मुख्य मंत्री ने व्यास जी से पूछा- 'आप सुयोग्य नाम दें जो आपके साहित्य पर काम करे. पंडित जी ने लगभग एक्कीस बरस के हुए एक नौजवान प्रभाकर श्रोत्रिय का नाम लिया.

अब पंडित जी के चार कमरों में भरे घटाटोप साहित्य पर काम शुरू हुआ तो मैं भी प्रभाकर दादा के साथ भिड़ गया. तब अचानक एक

दिन धर्मयुग के आरंभिक अंको की फ़ाइल हाथ लगी जिसमें लगभग हर दो अंक छोड़ कर व्यास जी की कवर स्टोरी कभी भारत के राज चिन्ह पर, कभी किसी गंभीर पुरातत्व विषय पर तो कभी व्यंग्य भी देखा. पंडित व्यास तो 1951 से धर्मयुग के बहुत नियमित लेखक थे तब तो संभवतः भारती जी संपादक भी नहीं हुए होंगे.

ये देख अपना साहस खुल गया, अपन ने भी भगतसिंह पर बहुत शोध किया था, अपन ने अपने लेख भेजने शुरू किये और सौभाग्य देखिए की 18-19 बरस का मैं धर्मयुग में प्रकाशित होने लगा. कभी नेहरू जन्मशताब्दी पर तो कभी संदीपनी आश्रम पर. लेकिन भारती जी संपादकों के संपादक थे. उन्होंने अपना ज्ञान पाया क्रांतिकारी साहित्य में. बस फिर क्या, उन्होंने प्रतिवर्ष 27 सितंबर भगतसिंह जन्मदिन और तेईस मार्च बलिदान दिवस पर नियमित भगतसिंह के अधखुले पन्ने छापने शुरू कर दिये.

कभी भगतसिंह का प्रेम प्रसंग तो कभी इंक़लाब के माइने क्या तो कभी आत्महत्या और भगतसिंह तो कभी- 'हमें फांसी नहीं गोली से उड़ा दो' जैसे शीर्षक से मेरे लेख छपते और मैं रातों-रात देश का बड़ा लेखक मान लिया गया. उन दिनों धर्मयुग में छपना बड़े लेखक हो जाने की स्टैम्प थी, कभी-कभी डॉक्टर भारती विषय दे कर भी लिखवाते जैसे वी श्री वाकणकर और नेहरू सुभाष के मतभेद पर. पर ज्यादातर मेरे लेख छपते भगतसिंह पर. सामने लाड़ली मोहन निगम लोहिया पर लिखते उनका जन्मदिन 23 मार्च था और दूसरी तरफ़ मेरा लेख भगतसिंह पर. यह क्रम बाद तक गणेश मंत्री और विश्वनाथ जी तक चला.

अब बस दो दिलचस्प क़िस्से भारती जी के और. उनकी याद में अश्रु सिक्त नमन. क़िस्से इतने मज़ेदार हैं कि आप भी बेहद आनंदित होंगे. पहला क़िस्सा तो यह कि उज्जयिनी में व्यास जी की प्रेरणा से ही डॉक्टर शिव शर्मा ने एक टेपा सम्मेलन शुरू किया, हास्य व्यंग्य का मूर्ख सम्मेलन एक अप्रैल को, शिव शर्मा भी टेपा हो गये. टेपा रिपोर्ट से धर्मयुग में छपने लगे थे. उन्होंने धर्मवीर भारती को भी बुला लिया ऊज्जैन. तब तक मैं दिल्ली आ गया था.

यह क़िस्सा मुझे डॉक्टर शिव मंगल सिंह सुमन भारती जी और शिव शर्मा तीनों ने खूब मज़े ले कर सुनाया था. था ही इतना मज़ेदार. भारती जी को लेने डॉक्टर सुमन गये, शिव शर्मा गये तो भारती जी ने ऊज्जैन उतरते ही कहा- 'सुमन जी, दो काम हैं. एक महाकाल दर्शन, एक व्यास जी के दर्शन'. (तब तक पंडित सूर्यनारायण व्यास का देहावसान 1976 में हो गया था). डॉक्टर सुमन को लगा कि भारती जी भूल गये कि व्यास जी का तो स्वर्गारोहण हो गया. उन्होंने चौंक कर कहा- 'क्या तुम्हें पता नहीं व्यास जी नहीं रहे?'

भारती जी ने कहा- 'अरे वह तो मालूम है, मैं तो राजशेखर व्यास जी की बात कर रहा हूं.'

अब तो सुमन जी और शिव शर्मा बिलकुल ही पगला गए- 'अरे! राजशेखर! जिसे तुम धर्मयुग में प्रकाशित करते हो वह? वह तो उन्नीस-बीस बरस का युवा है, तुम क्या समझे?'

अब भारती जी ज़मीन पर आये. उन्हें लगता था कि मैं व्यास जी का ज्येष्ठपुत्र हूं तो लगभग साठ- सत्तर बरस का होऊंगा. मेरे हस्ताक्षर भी बहुत सुंदर थे तो उन्हें भ्रम हुआ कि मै पंडित जी का बड़ा पुत्र और शायद आज़ादी का योद्धा रहा होऊंगा और इसीलिए भगतसिंह जैसे मेरे साथियों पर प्रामाणिक लिख रहा हूं. पंडित जी थे भगतसिंह के साथी पर उनके दिमाग़ में सब कुछ गड्ड-मड्ड हो गया. अब देर रात तक सुमन भारती जी और शिव शर्मा ठहाका लगाते रहे.

अब इसका दुष्परिणाम क्या हुआ? मुझे उन्होंने मुंबई जाते ही कार्टून कोना ढब्बू जी के ऊपर बच्चों वाले स्तंभ में छापना शुरू कर दिया। इसी बरस फिर भगतसिंह का बलिदान दिवस और जन्मदिन आया. अब? इस बार उन्होंने मेरा लेख अंदर के पन्नों पर न छाप कर वापस ही कर दिया। मुझ नौजवान पर बिजली गिरी. इतने बरस से भगतसिंह पर मैं लिख ही रहा था, छप ही रहा था और अब मेरा लेख वापस? गुस्से में भरकर उन्हें एक पत्र लिखा- 'वक्त जब चमन पर आया तो हमने खून से सींचा / अब जब बहार आयी तो कहते हैं तेरा काम नहीं? बरसों मुझसे भगतसिंह पर लिखवाया और अब जब चारों तरफ़ भगतसिंह भगतसिंह हो रहे तो मुझे धर्मयुग से बाहर कर दिया?'

भारती जी संपादकों के संपादक थे. बड़े प्यारे उस्ताद. लौटती डाक से उनका प्यार भरा उत्तर आया- 'तुम ये न भूलो कि तुम महान विद्वान पंडित सूर्यनारायणव्यास के सुपुत्र हो उन्होंने कालिदास और विक्रम का नाम सारे विश्व में फैला दिया उनके बाद भगवतशरण उपाध्याय, कमला रत्नम दिवाकर जी, वासुदेव शरण जी सबने खूब काम किया. तो क्या व्यास जी नाराज़ होते थे कि ये क्यों काम कर रहें हैं कालिदास पर विक्रम पर? बल्कि वे प्रसन्न होते थे कि मेरा उठाया काम ही आगे बढ़ रहा है. ऐसे ही तुम भगतसिंह को ले कर चले अब और लोग भी लिखने लगे तो खुश हो जाओ कि मेरा काम आगे बढ़ा.अभी युवा हो, खूब नाम हो गया है, खुश रहो, खूब लिखो, नाराज़ न रहो अगले अंक में बैसाखी पर तुम्हारा भगतसिंह पर लेख आ रहा है. खुश रहो - तुम्हारा - भारती' ■

राखी बंधवा ले मेरे वीर

विनीता गुप्ता

राखी या रक्षाबंधन का त्यौहार नजदीक आते ही मन पंख लगा कर उड़ने को उद्यत होने लगता है, अरमानों की चुनरिया लहराने लगती है और प्रतीक्षा रहती है कि कब बाबुल का संदेशा आएगा कब भैया की पाती आएगी और पीहर जाने हेतु उतावला मन कितनी मधुर-मधुर बचपन की यादों में खो जाता है. सुधबुध खो बैठता है वह बच्चा सा दिल जो कहीं जाकर माई के आंचल में और पिता की गोद में सिमट जाना चाहता है. भैया से लड़-झगड़ कर रोना, मनुहार करना और फिर एक होकर खेलना. अहा ! कितना प्यारा बचपन और उस पर राखी का त्यौहार. याद आता है फिल्म का एक गीत-

रंग बिरंगी राखी लेकर आई बहना,

राखी बंधवा ले मेरे वीर बंधवा ले रे चंदा

यह पर्व हर वर्ष श्रावण मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है, कच्चे धागों से बंधते पक्के रिश्ते पवित्रता एवं स्नेह के परिचायक हैं. भारत के अनेक हिस्सों में अलग-अलग नामों से इस त्यौहार को जाना जाता है, जैसे दक्षिण भारत में नारियल पूर्णिमा, नेपाल में जनेऊ पूर्णिमा, बंगाल में गुरु महा पूर्णिमा और अन्य स्थानों पर श्रावणी, राखी, रक्षाबंधन, इत्यादि.

रक्षाबंधन मनाने का पौराणिक प्रसंग : यह त्यौहार 6000 वर्ष पुराना है. रक्षा बंधन त्योहार मनाए जाने के संबंध में कई ऐतिहासिक प्रसंग एवं पौराणिक तथ्यों का उल्लेख मिलता है. कहते हैं कि देवताओं के राजा इंद्र राक्षसों से बार-बार पराजित होने के कारण और निराश होकर अपना मनोबल कम करके बैठ गए थे. जब इंद्राणी ने देखा कि इंद्र निराश हो चुके हैं तब उन्होंने कठिन तपस्या करके अपने तपोबल से एक रक्षा सूत्र तैयार किया और इंद्र की कलाई पर बांध दिया. तब इस रक्षा सूत्र के प्रभाव से इंद्र को विजय प्राप्त हुई तथा वे राक्षसों को पराजित कर सके. तब से रक्षाबंधन की शुरुआत हुई.

ऐतिहासिक प्रसंग : मध्यकालीन युग इस त्यौहार की शुरुआत मानी जाती है. जब राजपूत योद्धा रणभूमि में युद्ध हेतु जाते थे सब राजपूताने की बेटियां उनकी आरती उतारकर कलाई पर रक्षा सूत्र बांधती थीं और वीरता से परिपूर्ण गीत गाकर उनकी कुशलता की कामना किया करती थीं. उस समय मुस्लिम शासकों द्वारा बलपूर्वक हिंदू स्त्रियों को कैद कर अपने हरम की शोभा बनाया जाता था और उनका शील हरण किया जाता था अतः अपने को बचाने के लिए उन्होंने राजपूत शासकों को राखियां भेजीं जिससे वह उन स्त्रियों के शील की रक्षा किया करते थे.

इसी क्रम में महारानी कर्णवती ने गुजरात के शासक बहादुर शाह के द्वारा चित्तौड़ पर आक्रमण करने पर बहादुर बादशाह हुमायूं को राखी भेज कर अपनी रक्षा का पैगाम भेजा था. इस पैगाम को पढ़कर हुमायूं भाव विभोर हो गए थे और उस रक्षा सूत्र को स्वीकार कर रानी कर्णवती को अपनी बहन मानकर उनकी युद्ध में रक्षा की थी.

वर्तमान परिवेश में रक्षाबंधन की प्रासंगिकता : रक्षाबंधन का त्यौहार भाई-बहन के प्रेम का प्रतीक है, इस पावन पर्व को मनाने का मुख्य उद्देश्य संकट में बहन की रक्षा करना और बहन द्वारा अपनी मन्नत और दुआओं से भाई के अच्छे जीवन की कामना करना है परंतु आज के बदलते परिवेश एवं स्वार्थ लोलुपता ने रंग बिरंगे त्यौहार को बदरंग रूप दे दिया है. बदलते सामाजिक स्वरूप ने न जाने कितने रिश्तों पर कालिख पोत कर रख दी है. आज बहन, भाई के घर जाकर कुछ अपेक्षाएं रखती है. भाई द्वारा दिए गए उपहारों का मूल्यांकन करती है और उपहार की कीमत देखकर भाई के प्यार को तौलती है, आकलन करती है कि उसके द्वारा दिया गया तोहफा किस कीमत का है. भाई भी बोझ समझकर, आई हुई बहन को भाव रहित विदा कर देता है. आज भाई-बहन का परस्पर प्रेम सौदेबाजी पर टिक गया है. हाँ अभी भी छोटे गांवों में, जहां पारिवारिक संस्कार जो विरासत में प्राप्त हुए हैं वहां त्यौहार बहुत ही भावनात्मक लगाव से मनाए जाते हैं. वहां अब भी प्रेम एवं सौहार्द्र की परंपराएं भारतीय संस्कृति में जीवंत हैं. अपेक्षा है कि हम अपनी भारतीय संस्कृति एवं संस्कारों को अपने मन में भावात्मक रूप से संजोए रखेंगे. ■

दुकान गोलगप्पे की..

रन्दी सत्यनारायण राव

बंदर जी ने गोलगप्पे की
दुकान है एक लगाई.

चूहे जी ने बोहनी की
फिर भालू की बारी आई.

सियार ने आ कर पूछा
एक बताओ कितने की?

उसने उंगली से हिसाब लगाया
और कहा अठन्नी की.

ट्राफिक पुलिस बन बिल्ली आई
कहा- 'किसने यह गुस्ताखी की?'

बीच सड़क पर दुकान लगाई
कानून तोड़ने की गलती की.

बंदर ने भी आंखें दिखलाई
कहा शेर ने आज्ञा दी.

सड़क हो गई बंदर की
अभी वह आते होंगे भाई.

उसकी घुड़की हवा हो गई
बोली क्यों नाराज होते भाई?

अच्छा किया जो दूकान लगाई
मुझे भी खिलाओ अठन्नी की.

बंदर की जैसे लाटरी खुली
गोलगप्पे की दुकान चल निकली.

ISSN 2815-8326

शकील आज़मी

भीड़ रिलीज़ हो गई है, जो तस्वीरें हैं वो बहोत सादगी के साथ मनाए गए प्रीमियर की हैं. अनुभव सिन्हा साहब की फिल्मों के प्रीमियर गाजे-बाजे के साथ होते हैं लेकिन इस बार ये ख़ामोशी और सादगी 'भीड़' के एहतेराम में बर्ती गई है. अगर मैं ये कहूं कि 'भीड़' फिल्म नहीं है तो क्या कहूं कि क्या है? दरअसल ये 'मीर तक़ी मीर' के शेरों में इस्तेमाल किए गए 'सी' और 'सा' की तरह फिल्म-सा कोई तमाशा या फिल्म-सी कोई चीज़ है.

ये फिल्म-सा और फिल्म-सी जैसे मुहावरे फिल्म को एक अलग और मुख़्तलिफ मुक़ाम देने के लिए इस्तेमाल किए गए हैं. एक दर्द का पहाड़ है जिसे काटने,एक नासूर है जिसे उसके मवाद से आज़ाद करने और धर्म, ज़ात और रंग-ओ-नस्ल के मेले में खोए हुए इंसान की तलाश और उसके घाव पर फाहा रखने की कोशिश है. जिस तरह भीड़ के बहुत सारे सिम्बोलिक मानी हैं, इसी तरह इस फ़िल्म की गहराई में बहुत सारी गहराइयां हैं. इसकी तहों में बेशुमार तहें और परतें हैं. यही वजह है कि कोरोना काल के लाक डाउन और पलायन के देखे हुए दृश्यों में बहोत कुछ अनदेखा भी है जो सिम्बोलिक है और देखे हुए में जो अनदेखा है उसे दिखाना ही आर्ट होता है.

ब्लैक एंड व्हाइट में इस फिल्म का आर्ट और निखर कर सामने आया है. मुल्क, आर्टिकल 15, थप्पड़ और अनेक के बाद अज़ीम फिल्म निर्देशक अनुभव सिन्हा साहब का फिल्म के इतिहास पथ पर ये अगला और मज़बूत क़दम है. मुझे लगता है ये फिल्म आस्कर में शामिल की जानी चाहिए. भीड़ एक महान फिल्म है और मुझे इस बात की खुशी है कि मैं इसका हिस्सा हूं, मेरी आप सबसे गुज़ारिश है कि ये फिल्म ज़रूर देखें और चर्चा करें. मोहब्बत ज़िन्दाबाद.

हर भीड़ का मैं हिस्सा, मैं आम आदमी हूं,
रहता हूं फिर भी तनहा, मैं आम आदमी हूं,
मुझपे ही पांव रख के जाते हैं सब गुज़र के-
मंज़िल का हूं मैं रस्ता, मैं आम आदमी हूं. ■

UNLOCK
YOUR FINANCIAL POTENTIAL
with Global Finance

global finance
your best interest since 2000

Winner of 50+ industry awards

We're the Piece that allows you to navigate Your Finances with Ease and Provide Comprehensive Solutions for Mortgages, Personal Risk Insurance, Business, and Commercial Loans.

Join Global Finances' referral campaign for a chance to win a share of $4000 worth of travel! This is your opportunity to travel, create unforgettable memories and share amazing experiences with your loved ones.

The first prize is a whopping $2500 worth of travel, the second prize is $1000 worth of travel, and the third prize is $500 worth of travel.

Not only are you entered to win a share of the prize pool, if your referrals convert to successful for GFS business, you'll also receive $250 for every referral*.

HOW CAN YOU PARTICIPATE?

Its easy! Simply refer Global Finance to your friends and family before 30th November 2023. The more people you refer, the higher your chances of winning.

Contact:

NORTH SHORE BRANCH

9C Apollo Drive, Rosedale

P | 09 255 5591
M | 027 755 5531

E | info@globalfinance.co.nz
W | www.globalfinance.co.nz

1st PRIZE
$2500
travel gift card

2nd PRIZE
$1000
travel gift card

3rd PRIZE
$500
travel gift card

$250
per *Referral per Customer
T&C's apply

इस तिमाही का चित्र

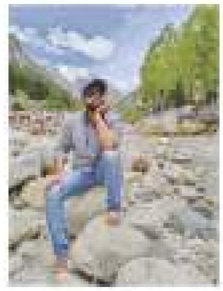

घुमक्कड़ रहमत

आप हर्षिल वैली, उत्तराखंड के निवासी हैं और टूर एंड ट्रैवल का काम किया करते हैं. इनके जीवन का उद्देश्य है पर्यटन को प्रकृति से जोड़कर पिछड़े हुए गांवों में पर्यटन को बढ़ावा देना. फोटोग्राफी शौक़िया करते हैं. चयनित तस्वीर चंद्रशिला स्थल की है.

अंतर्राष्ट्रीय, हिंदी त्रैमासिक ऑन लाइन पत्रिका 'पहचान' हेतु आप भी रचनाएं भेज सकते हैं.

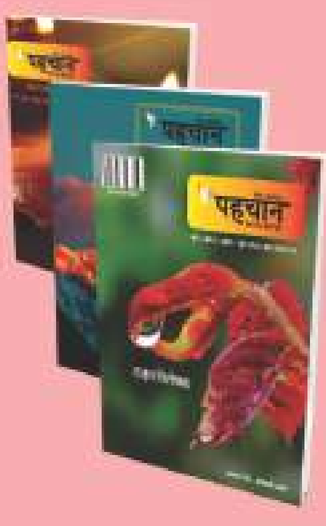

आलेख, समीक्षा, साक्षात्कार, शोध परक लेख, व्यंग्य, संस्मरण, यात्रा वृत्तांत, लोक साहित्य, बाल साहित्य, कविता, गीत, कहानी, लघु कथा आस्था, धरोहर, इतिहास, कला, विज्ञान, स्वास्थ्य आदि साहित्य की सभी विधाओं में रचनाओं का स्वागत है.

रचनाएं वर्ड फ़ाइल में अपनी तस्वीर और परिचय सहित भेजें. लेख के लिए 800 से 1,000 और कहानी के लिए अधिकतम शब्द सीमा 1600 शब्द है.

यदि आप अपना खींचा कोई चित्र पत्रिका के कवर पेज या फिर तिमाही चित्र चयन के लिए विचारार्थ भेजना चाहें तो अपने परिचय के साथ चित्र के बारे में बताते हुए ई मेल कर सकते हैं.

संपादक मंडल का निर्णय अंतिम निर्णय होगा, इसमें विवाद की गुंजाईश नहीं होगी.

editor@pehachaan.com